परमेश्वर का अद्भुत उद्धार

विषयवस्तु

1. परिचय..... 1
2. परमेश्वर का वचन और परमेश्वर का मार्ग 2
3. परमेश्वर की सृष्टि 8
4. परमेश्वर की सिद्ध भलाई..... 9
5. परमेश्वर का सिद्ध न्याय 17
6. परमेश्वर का अद्भुत प्रेम.....21
7. यीशु, हमारे परमेश्वर और उद्धारकर्ता हैं.....24
8. यीशु ने हमारे लिए सब कुछ किया 28
9. यीशु पर विश्वास करने की सरलता 35
10. स्वर्ग और नरक 41
11. बलिदान और व्यवस्था 43
12. भविष्यवाणियाँ और पूर्वाभास 49
13. आदम और हव्वा.....52
14. कैन और हाबिल.....54
15. कोढ़ की बीमारी से सीखना.....55
16. परमेश्वर की दृष्टि में दो प्रकार के लोग - 61
17. अपनी आवश्यकता को समझना 65
18. परमेश्वर का उद्धार सभी के लिए उपलब्ध है.....69

1. परिचय

परमेश्वर के उद्धार का संदेश, जिसे हम "सुसमाचार" कहते हैं (जिसका अर्थ है "शुभ समाचार"), एक साधारण और खूबसूरत संदेश है। इसका सार यहाँ दिया गया है:

परमेश्वर ने हर चीज़ को बहुत अच्छा और परिपूर्ण बनाया था, लेकिन पाप के कारण हमारे जीवन में मृत्यु, बीमारी और दुख आ गए। पाप, या ग़लती, वह है जब हम परमेश्वर की धार्मिकता के मानकों पर खरे नहीं उतरते। ये मानक हमें हर तरह से, हर समय अच्छा और सही बनने के लिए कहते हैं। सच तो यह है कि हम सबने कभी न कभी ग़लती की है और स्वभाव से ही हम पापी हैं। अपने अच्छे कर्मों से हम परमेश्वर की स्वीकृति नहीं पा सकते। परमेश्वर पवित्र और न्यायी है, यानी उसका स्वभाव पवित्र, आदर्श और निर्दोष है। उसका प्रेम संपूर्ण है, लेकिन उसकी न्यायप्रियता भी इतनी ही संपूर्ण है कि वह हमारे पाप को अनदेखा नहीं कर सकता। उसके न्याय का तकाज़ा है कि हमारे पापों का हिसाब हो।

यहीं पर परमेश्वर का महान प्रेम और दया सामने आते हैं। इस प्रेम ने उसे हमारे लिए एक अद्भुत योजना बनाने के लिए प्रेरित किया। परमेश्वर का पुत्र, यीशु मसीह, मनुष्य के रूप में धरती पर आया, एक कुंवारी से जन्म लिया, और एक पूर्ण जीवन जिया ताकि वह हमारे स्थान पर न्याय का भार उठा सके। उसने हमारे पापों का बोझ अपने ऊपर लिया और हमारे लिए बलिदान बन गया। यीशु हमारे पापों के लिए मरा, उसे दफनाया गया, और तीन दिन बाद वह फिर से जी उठा। उसने यह सब हमारे लिए किया, इसलिए अगर हम अपने पापों को स्वीकारते हैं और उसके पास आते हैं, सिर्फ यह विश्वास रखते हुए कि उसने हमारे लिए यह बलिदान दिया और हमारे उद्धार के लिए जी उठा है, और अगर हम इस उद्धार पर भरोसा रखते हैं (बिना किसी अन्य शर्त के), तो हमें अपने पापों की क्षमा मिल जाती है। हम नरक से बचते हैं और हमें एक ऐसा अनंत जीवन मिलता है

जो पूर्ण शांति, आनंद और आशीषों से भरा होता है – जहाँ मृत्यु, बीमारी, पीड़ा, दुख और पाप का कोई स्थान नहीं है।

यह पुस्तिका इस बात को प्रदर्शित करती है कि परमेश्वर ने अपनी पवित्र पुस्तक (बाइबल) में किस प्रकार लगातार और स्पष्ट रूप से इस अद्भुत उद्धार के संदेश को बताया है। इसमें लगभग 80% सामग्री बाइबल से ली गई है। इसमें पुराने नियम की 39 पुस्तकों में से 32 और नए नियम की 27 पुस्तकों में से 23 पुस्तकों के अंश शामिल हैं। खास बात यह है कि इसमें कोई भी अंश दोहराया नहीं गया है।

पुराना नियम यहूदी/हिब्रू बाइबल (जिसे तनख कहा जाता है) के समान है। परमेश्वर का उद्धार का संदेश हमेशा से एक सा ही रहा है। नया नियम, पुराने नियम से कोई बदलाव नहीं लाता, बल्कि यह परमेश्वर की उन प्रतिज्ञाओं को पूरा करने का एक प्रमाण प्रस्तुत करता है जो उसने पुराने नियम में की थीं।

2. परमेश्वर का वचन और परमेश्वर का मार्ग

बाइबल का लेखन कई लोगों के हाथों से हुआ, लेकिन इसका वास्तविक स्रोत परमेश्वर ही है।

"सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धार्मिकता की शिक्षा के लिये लाभदायक है।" (2 तीमुथियुस 3:16)

"परन्तु जो जो वचन यहोवा के मुँह से निकलते हैं उन ही से वह जीवित रहता है।" (व्यवस्थाविवरण 8:3)

"क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।" (2 पतरस 1:21)

परमेश्वर की सामर्थ्य और समझ, हमारे विचारों से परे है।

"'हे प्रभु यहोवा, तू ने बड़ी सामर्थ्य और बढ़ाई हुई भुजा से आकाश और पृथ्वी को बनाया है! तेरे लिये कोई काम कठिन नहीं है।" (यिर्मयाह 32:17)

" "मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ कर सकता है, और तेरी युक्तियों में से कोई रुक नहीं सकती।" (अय्यूब 42:2)

"वह तारों को गिनता, और उन में से एक एक का नाम रखता है। हमारा प्रभु महान् और अति सामर्थी है; उसकी बुद्धि अपरम्पार है।" (भजन संहिता 147:4-5)

परमेश्वर पर्याप्त सामर्थ्यवान है कि वह अपने वचन को सदियों तक सुरक्षित रख सके। यह सत्य है और इसमें कभी कोई बदलाव की आवश्यकता नहीं होगी।

"परमेश्वर का वचन पवित्र है, ... तू ही हे परमेश्वर उनकी रक्षा करेगा, उनको इस काल के लोगों से सर्वदा के लिये बचाए रखेगा।" (भजन संहिता 12:6-7)

"घास तो सूख जाती, और फूल मुर्झा जाता है; परन्तु हमारे परमेश्वर का वचन सदैव अटल रहेगा।" (यशायाह 40:8)

"हे यहोवा, तेरा वचन, आकाश में सदा तक स्थिर रहता है।" (भजन संहिता 119:89)

"बहुत समय से मैं तेरी चितौनियों को जानता हूँ, कि तू ने उनकी नींव सदा के लिये डाली है।" (भजन संहिता 119:152)

"आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।" (मत्ती 24:35)

"क्योंकि तुम ने नाशवान् नहीं पर अविनाशी बीज से, परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरनेवाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है।" (1 पतरस 1:23)

"अब हे प्रभु यहोवा, तू ही परमेश्वर है, और तेरे वचन सत्य हैं, और तू ने अपने दास को यह भलाई करने का वचन दिया है।" (2 शमूएल 7:28)

"तेरा सारा वचन सत्य ही है; और तेरा एक एक धर्ममय नियम सदा काल तक अटल है।" (भजन संहिता 119:160)

परमेश्वर का हमारे भविष्य को लेकर न्याय अनंत तक रहेगा, और वह चाहता है कि हम सही मार्ग चुनें और उसके साथ बने रहें।

"और जैसे मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है," (इब्रानियों 9:27)

"तेरा सारा वचन सत्य ही है; और तेरा एक एक धर्ममय नियम सदा काल तक अटल है।" (भजन संहिता 119:160)

"और बपतिस्मों और हाथ रखने, और मरे हुओं के जी उठने, और अन्तिम न्याय की शिक्षा रूपी नींव फिर से न डालें।" (इब्रानियों 6:2)

"जो अपने ऊपर भरोसा रखता है, वह मूर्ख है; और जो बुद्धि से चलता है, वह बचता है।" (नीतिवचन 28:26)

"बुद्धिमान डरकर बुराई से हटता है, परन्तु मूर्ख ढीठ होकर निडर रहता है।" (नीतिवचन 14:16)

"चतुर मनुष्य विपत्ति को आते देखकर छिप जाता है; परन्तु भोले लोग आगे बढ़कर दण्ड भोगते हैं।" (नीतिवचन 22:3)

"जो आज्ञा को मानता, वह अपने प्राण की रक्षा करता है, परन्तु जो अपने चालचलन के विषय में निश्चिन्त रहता है, वह मर जाता है।" (नीतिवचन 19:16)

"जो शिक्षा को सुनी-अनसुनी करता, वह अपने प्राण को तुच्छ जानता है, परन्तु जो डाँट को सुनता, वह बुद्धि प्राप्त करता है।" (नीतिवचन 15:32)

"यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा?" (मरकुस 8:36)

परमेश्वर सर्वशक्तिमान है, इसलिए वह हमें उद्धार का सही मार्ग बताने में सक्षम है।

"जो कुछ यहोवा ने चाहा उसे उसने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और सब गहिरे स्थानों में किया है।" (भजन संहिता 135:6)

"राजा के सामने से उतावली के साथ न लौटना और न बुरी बात पर हठ करना, क्योंकि वह जो कुछ चाहता है करता है। क्योंकि राजा के वचन में तो सामर्थ्य रहती है, और कौन उससे कह सकता है कि तू क्या करता है?'" (सभोपदेशक 8:3–4)

"सेनाओं के यहोवा ने यह शपथ खाई है, “नि:सन्देह जैसा मैं ने ठान लिया है, वैसा ही हो जाएगा, और जैसी मैं ने युक्ति की है, वैसी ही पूरी होगी, ... क्योंकि सेनाओं के यहोवा ने युक्ति की है और कौन उसको टाल सकता है? उसका हाथ बढ़ाया गया है, उसे कौन रोक सकता है?'" (यशायाह 14:24,27)

"पृथ्वी के सब रहनेवाले उसके सामने तुच्छ गिने जाते हैं, और वह स्वर्ग की सेना और पृथ्वी के रहनेवालों के बीच अपनी ही इच्छा के अनुसार काम करता है; और कोई उसको रोककर उस से नहीं कह सकता है, “तू ने यह क्या किया है?'" (दानिय्येल 4:35)

परमेश्वर हमसे प्रेम करता है, लेकिन वह हमारे "सच्चेपन" या "विश्वास" को स्वीकार नहीं करता यदि हम उसे ग़लत तरीके से रखते हैं।

"क्योंकि उन्होंने ज्ञान से बैर किया, और यहोवा का भय मानना उनको न भाया। उन्होंने मेरी सम्मति न चाही, वरन् मेरी सब ताड़नाओं को तुच्छ जाना। इसलिये वे अपनी करनी का फल आप भोगेंगे, और अपनी युक्तियों के फल से अघा जाएँगे। क्योंकि भोले लोगों का भटक जाना, उनके घात किए जाने का कारण होगा, और निश्चिन्त रहने के कारण मूढ़ लोग नष्ट होंगे, परन्तु जो मेरी सुनेगा, वह निडर बसा रहेगा, और बेखटके सुख से रहेगा।" (नीतिवचन 1:29–33)

"मूढ़ को अपनी ही चाल सीधी जान पड़ती है, परन्तु जो सम्मति मानता, वह बुद्धिमान है।" (नीतिवचन 12:15)

"क्योंकि मैं उनकी गवाही देता हूँ कि उनको परमेश्वर के लिये धुन रहती है, परन्तु बुद्धिमानी के साथ नहीं।" (रोमियों 10:2)

"मनुष्य का ज्ञानरहित रहना अच्छा नहीं, और जो उतावली से दौड़ता है वह चूक जाता है।" (नीतिवचन 19:2)

"इस कारण निर्बुद्धि न हो, पर ध्यान से समझो कि प्रभु की इच्छा क्या है।" (इफिसियों 5:17)

"यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, “तुम पवित्रशास्त्र और परमेश्वर की सामर्थ्य नहीं जानते; इस कारण भूल में पड़े हो।'" (मत्ती 22:29)

"जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उसको दोषी ठहरानेवाला तो एक है: अर्थात् जो वचन मैं ने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा।" (यूहन्ना 12:48)

हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारे विश्वास, ग़लत शिक्षाओं, परंपराओं, या हमारी भावनाओं पर नहीं, परन्तु परमेश्वर के वचन पर आधारित हों।

"उसने उनसे कहा, "यशायाह ने तुम कपटियों के विषय में बहुत ठीक भविष्यद्वाणी की; जैसा लिखा है : 'ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उनका मन मुझ से दूर रहता है। ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की आज्ञाओं को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।' क्योंकि तुम परमेश्वर की आज्ञा को टालकर मनुष्यों की रीतियों को मानते हो।" उसने उनसे कहा, "तुम अपनी परम्पराओं को मानने के लिये परमेश्वर की आज्ञा कैसी अच्छी तरह टाल देते हो!'" (मरकुस 7:6–9)

क्योंकि परमेश्वर हमसे बहुत प्रेम करता है, उसने अपने वचन में हमें कई चेतावनियाँ दी हैं और हमें सही मार्ग सिखाया है।

"तेरा वचन मेरे पाँव के लिये दीपक, और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है।" (भजन संहिता 119:105)

"तेरी बातों के खुलने से प्रकाश होता है; उससे भोले लोग समझ प्राप्त करते हैं।" (भजन संहिता 119:130)

"उन्हीं से तेरा दास चिताया जाता है; उनके पालन करने से बड़ा ही प्रतिफल मिलता है।" (भजन संहिता 19:11)

"तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन् सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा। अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न होना; यहोवा का भय मानना, और बुराई से अलग रहना।" (नीतिवचन 3:5–7)

"जितनी बातें पहले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गईं हैं कि हम धीरज और पवित्रशास्त्र के प्रोत्साहन द्वारा आशा रखें।" (रोमियों 15:4)

"और बचपन से पवित्रशास्त्र तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिये बुद्धिमान बना सकता है।" (2 तीमुथियुस 3:15)

हम परमेश्वर में पूरी तरह से विश्वास रख सकते हैं क्योंकि वह कभी अपना मार्ग नहीं बदलता।

""क्योंकि मैं यहोवा बदलता नहीं; इसी कारण, हे याकूब की सन्तान तुम नष्ट नहीं हुए।" (मलाकी 3:6)

"आदि में तू ने पृथ्वी की नींव डाली, और आकाश तेरे हाथों का बनाया हुआ है। वह तो नष्ट होगा, परन्तु तू बना रहेगा; और वह सब कपड़े के समान पुराना हो जाएगा। तू उसको वस्त्र के समान बदलेगा, और वह बदल जाएगा; परन्तु तू वही है, और तेरे वर्षों का अन्त नहीं होने का।" (भजन संहिता 102:25–27)

"क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिसमें न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है।" (याकूब 1:17)

"यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक-सा है।" (इब्रानियों 13:8)

"ईश्वर मनुष्य नहीं कि झूठ बोले, और न वह आदमी है कि अपनी इच्छा बदले। क्या जो कुछ उसने कहा उसे न करे? क्या वह वचन देकर उसे पूरा न करे?" (गिनती 23:19)

"यहोवा जाति-जाति की युक्ति को व्यर्थ कर देता है; वह देश देश के लोगों की कल्पनाओं को निष्फल करता है। यहोवा की युक्ति सर्वदा स्थिर रहेगी, उसके मन की कल्पनाएँ पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहेंगी।" (भजन संहिता 33:10–11)

3. परमेश्वर की सृष्टि

इस संसार या ब्रह्माण्ड में कहीं भी परमेश्वर के अलावा कोई अन्य ईश्वर नहीं है, और परमेश्वर ने अपनी सृष्टि के माध्यम से हमें अपनी उपस्थिति स्पष्ट की है।

"यहोवा, जो इस्राएल का राजा है, अर्थात् सेनाओं का यहोवा जो उसका छुड़ानेवाला है, वह यों कहता है, "मैं सबसे पहला हूँ, और मैं ही अन्त तक रहूँगा; मुझे छोड़ कोई परमेश्वर है ही नहीं।'" (यशायाह 44:6)

"प्राचीनकाल की बातें स्मरण करो जो आरम्भ ही से हैं, क्योंकि परमेश्वर मैं ही हूँ, दूसरा कोई नहीं; मैं ही परमेश्वर हूँ और मेरे तुल्य कोई भी नहीं है। मैं तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूँ जो अब तक नहीं हुई। मैं कहता हूँ, 'मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी इच्छा को पूरी करूँगा।" (यशायाह 46:9–10)

"परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं। इसलिये कि परमेश्वर के विषय का ज्ञान उनके मनों में प्रगट है, क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया है। उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ्य और परमेश्वरत्व, जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहाँ तक कि वे निरुत्तर हैं।" (रोमियों 1:18–20)

"परन्तु दुष्ट और बहकानेवाले धोखा देते हुए और धोखा खाते हुए, बिगड़ते चले जाएँगे।" (2 तीमुथियुस 3:13)

"मूढ़ ने अपने मन में कहा, "कोई परमेश्वर है ही नहीं।" वे बिगड़ गए, उन्होंने कुटिलता के घिनौने काम किए हैं; कोई सुकर्मी नहीं।" (भजन संहिता 53:1)

"परमेश्वर को दुष्ट क्यों तुच्छ जानता है, और अपने मन में कहता है, "तू लेखा न लेगा?'" (भजन संहिता 10:13)

"पर वे उसको जो जीवतों और मरे हुओं का न्याय करने को तैयार है, लेखा देंगे।" (1 पतरस 4:5)

"क्योंकि लिखा है, "प्रभु कहता है, मेरे जीवन की सौगन्ध कि हर एक घुटना मेरे सामने टिकेगा, और हर एक जीभ परमेश्वर को अंगीकार करेगी।" इसलिये हम में से हर एक परमेश्वर को अपना अपना लेखा देगा।" (रोमियों 14:11–12)

परमेश्वर ने सब कुछ बहुत अच्छा बनाया था, लेकिन पाप के कारण मृत्यु, बीमारी और कष्ट आए और अभी भी जारी हैं। परंतु हमें एक आशा है!

"तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है।" (उत्पत्ति 1:31)

"इसलिये जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया।" (रोमियों 5:12)

"मैं सड़ी-गली वस्तु के तुल्य हूँ, जो नष्ट हो जाती है, और कीड़ा खाए कपड़े के तुल्य हूँ।" (अय्यूब 13:28)

"कि सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी।" (रोमियों 8:21)

परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे। उसी ने अपने आप को हमारे पापों के लिये दे दिया, ताकि हमारे परमेश्वर और पिता की इच्छा के अनुसार हमें इस वर्तमान बुरे संसार से छुड़ाए।" (गलातियों 1:3–4)

"परमेश्वर जो आशा का दाता है तुम्हें विश्वास करने में सब प्रकार के आनन्द और शान्ति से परिपूर्ण करे, कि पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से तुम्हारी आशा बढ़ती जाए।" (रोमियों 15:13)

4. <u>परमेश्वर की सिद्ध भलाई</u>

परमेश्वर हर प्रकार से और हर समय पूर्णतः धर्मी और भला है।

"यहोवा अपनी सब गति में धर्मी और अपने सब कामों में करुणामय है।" (भजन संहिता 145:17)

"जिस से यह प्रगट हो कि यहोवा सच्चा है; वह मेरी चट्टान है, और उस में कुटिलता कुछ भी नहीं।" (भजन संहिता 92:15)
"यहोवा जो उसके बीच में है, वह धर्मी है, वह कुटिलता न करेगा; वह अपना न्याय प्रति भोर प्रगट करता है और चूकता नहीं; परन्तु कुटिल जन को लज्जा आती ही नहीं।" (सपन्याह 3:5)
"हमारे परमेश्वर यहोवा को सराहो, और उसके पवित्र पर्वत पर दण्डवत् करो; क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा पवित्र है!" (भजन संहिता 99:9)
"जो समाचार हम ने उस से सुना और तुम्हें सुनाते हैं, वह यह है कि परमेश्वर ज्योति है और उसमें कुछ भी अन्धकार नहीं।" (1 यूहन्ना 1:5)

परमेश्वर स्वर्ग में हमारे साथ रहने के लिए हमसे भी उसी पूर्णता की अपेक्षा करता है, लेकिन हम सभी इस पूर्णता में असफल रहे हैं।
"और मैं न्याय को डोरी और धर्म को साहुल ठहराऊँगा; और तुम्हारा झूठ का शरणस्थान ओलों से बह जाएगा, और तुम्हारे छिपने का स्थान जल से डूब जाएगा।" (यशायाह 28:17)
""इस्राएलियों की सारी मण्डली से कह कि तुम पवित्र बने रहो; क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा पवित्र हूँ।" (लैव्यवस्था 19:2)
"इसलिये चाहिये कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।" (मत्ती 5:48)
"अब, हे इस्राएल, तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ से इसके सिवाय और क्या चाहता है, कि तू अपने परमेश्वर यहोवा का भय माने, और उसके सारे मार्गों पर चले, उससे प्रेम रखे, और अपने पूरे मन और अपने सारे प्राण से उसकी सेवा करे, और यहोवा की जो जो आज्ञा और विधि मैं आज तुझे सुनाता हूँ उनको ग्रहण करे, जिससे तेरा भला हो?" (व्यवस्थाविवरण 10:12–13)
"जब अब्राम निन्यानवे वर्ष का हो गया, तब यहोवा ने उसको दर्शन देकर कहा, “मैं सर्वशक्तिमान् ईश्वर हूँ; मेरी उपस्थिति में चल और सिद्ध होता जा।" (उत्पत्ति 17:1)

परमेश्वर हमारा न्याय इस बात पर आधारित नहीं करेगा कि हम दूसरों के मुकाबले कैसे थे, या हमारे द्वारा किए गए अच्छे कार्य, हमारे बुरे कार्यों की अपेक्षा अधिक बढ़कर थे या नहीं।

"क्योंकि हमें यह साहस नहीं कि हम अपने आप को उनमें से ऐसे कुछ के साथ गिनें या उनसे अपने को मिलाएँ, जो अपनी प्रशंसा आप करते हैं, और अपने आप को आपस में नाप तौलकर एक दूसरे से मिलान करके मूर्ख ठहरते हैं।" (2 कुरिन्थियों 10:12)

"परन्तु यहोवा ने शमूएल से कहा, "न तो उसके रूप पर दृष्टिकर, और न उसके कद की ऊँचाई पर, क्योंकि मैं ने उसे अयोग्य जाना है; क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है; मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है।'" (1 शमूएल 16:7)

"क्योंकि यदि कोई कुछ न होने पर भी अपने आप को कुछ समझता है, तो अपने आप को धोखा देता है।" (गलातियों 6:3)

"क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है परन्तु एक ही बात में चूक जाए तो वह सब बातों में दोषी ठहर चुका है।" (याकूब 2:10)

"परन्तु जब धर्मी अपने धर्म से फिरकर टेढ़े काम, वरन् दुष्ट के सब घृणित कामों के अनुसार करने लगे, तो क्या वह जीवित रहेगा? जितने धर्म के काम उसने किए हों, उनमें से किसी का स्मरण न किया जाएगा। जो विश्वासघात और पाप उसने किया हो, उसके कारण वह मर जाएगा।" (यहेजकेल 18:24)

हम में से कोई भी परमेश्वर के मानक पर खरा नहीं उतरता और हम सभी उसकी पूर्ण और अनंत पवित्रता के सामने पूरी तरह से असफल हैं।

"परमेश्वर ने स्वर्ग पर से मनुष्यों के ऊपर दृष्टि की ताकि देखे कि कोई बुद्धि से चलनेवाला या परमेश्वर को पूछनेवाला है कि नहीं। वे सब के सब हट गए; सब एक साथ बिगड़ गए; कोई सुकर्मी नहीं, एक भी नहीं।" (भजन संहिता 53:2–3)

"नि:सन्देह पृथ्वी पर कोई ऐसा धर्मी मनुष्य नहीं जो भलाई ही करे और जिस से पाप न हुआ हो।" (सभोपदेशक 7:20)

"भक्त लोग पृथ्वी पर से नष्ट हो गए हैं, और मनुष्यों में एक भी सीधा जन नहीं रहा; वे सब के सब हत्या के लिये घात लगाते, और जाल लगाकर अपने अपने भाई का आहेर करते हैं।... उनमें से जो सबसे उत्तम है, वह कटीली झाड़ी के समान दु:खदाई है, जो सबसे सीधा है, वह काँटेवाले बाड़े से भी बुरा है। तेरे पहरुओं का कहा हुआ दिन अर्थात् तेरे दण्ड का दिन आ गया है। अब वे शीघ्र चौंधिया जाएँगे। " (मीका 7:2,4)

"सचमुच नीच लोग तो अस्थाई, और बड़े लोग मिथ्या ही हैं; तौल में वे हलके निकलते हैं; वे सब के सब साँस से भी हलके हैं।" (भजन संहिता 62:9)

"क्योंकि कुछ भेद नहीं; इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" (रोमियों 3:22–23)

"क्योंकि यहोवा कहता है, मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं हैं, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है। क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है'" (यशायाह 55:8–9)

"तो फिर क्या हुआ? क्या हम उनसे अच्छे हैं? कभी नहीं; क्योंकि हम यहूदियों और यूनानियों दोनों पर यह दोष लगा चुके हैं कि वे सब के सब पाप के वश में हैं। जैसा लिखा है : "कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं।.... सब भटक गए हैं, सब के सब निकम्मे बन गए हैं; कोई भलाई करने वाला नहीं, एक भी नहीं।'" (रोमियों 3:9–10,12)

जैसा कि यीशु ने सिखाया, परमेश्वर हमसे न केवल हमारे कार्यों में, बल्कि हमारे दिल, विचार, वाणी, उद्देश्यों, और दृष्टिकोण में भी पूर्णता की अपेक्षा करता है।

"देख, तू हृदय की सच्चाई से प्रसन्न होता है; और मेरे मन ही में ज्ञान सिखाएगा।" (भजन संहिता 51:6)

""तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, 'व्यभिचार न करना।' परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका।" (मत्ती 5:27–28)

"विवाह सब में आदर की बात समझी जाए, और विवाह-बिछौना निष्कलंक रहे, क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों, और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा।" (इब्रानियों 13:4)

""तुम सुन चुके हो, कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था कि 'हत्या न करना', और 'जो कोई हत्या करेगा वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा।' परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि जो कोई अपने भाई पर क्रोध करेगा, वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा, और जो कोई अपने भाई को निकम्मा कहेगा वह महासभा में दण्ड के योग्य होगा; और जो कोई कहे 'अरे मूर्ख' वह नरक की आग के दण्ड के योग्य होगा।" (मत्ती 5:21–22)

"जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह हत्यारा है; और तुम जानते हो कि किसी हत्यारे में अनन्त जीवन नहीं रहता।" (1 यूहन्ना 3:15)

""हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय! तुम चूना फिरी हुई कब्रों के समान हो जो ऊपर से तो सुन्दर दिखाई देती हैं, परन्तु भीतर मुर्दों की हड्डियों और सब प्रकार की मलिनता से भरी हैं। इसी रीति से तुम भी ऊपर से मनुष्यों को धर्मी दिखाई देते हो, परन्तु भीतर कपट और अधर्म से भरे हुए हो।" (मत्ती 23:27–28)

झूठ का पाप इसमें भी शामिल है कि हम परमेश्वर के स्वभाव के बारे में स्वयं से झूठ बोलें, जैसे यह कहना कि "चूंकि परमेश्वर प्रेममय है, वह हमारे पाप को नज़रअंदाज़ कर देगा।"

""देखो, तुम झूठी बातों पर भरोसा रखते हो जिनसे कुछ लाभ नहीं हो सकता।" (यिर्मयाह 7:8)

"क्या ही धन्य है वह पुरुष, जो यहोवा पर भरोसा करता है, और अभिमानियों और मिथ्या की ओर मुड़नेवालों की ओर मुँह न फेरता हो।" (भजन संहिता 40:4)

"तू उनको जो झूठ बोलते हैं नष्ट करेगा; यहोवा तो हत्यारे और छली मनुष्य से घृणा करता है।" (भजन संहिता 5:6)

"पर कुत्ते, और टोन्हें, और व्यभिचारी, और हत्यारे और मूर्तिपूजक, और हर एक झूठ का चाहनेवाला और गढ़नेवाला बाहर रहेगा।" (प्रकाशितवाक्य 22:15)

"परन्तु डरपोकों, और अविश्वासियों, और घिनौनों, और हत्यारों और व्यभिचारियों, और टोन्हों, और मूर्तिपूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा जो आग और गन्धक से जलती रहती है : यह दूसरी मृत्यु है।" (प्रकाशितवाक्य 21:8)

प्रतिमा की आराधना करने का पाप इसमें भी शामिल है कि हम अपने मन में परमेश्वर की कोई ग़लत छवि बनाएं जो हमारी पसंद के अनुसार हो।

"अत: परमेश्वर का वंश होकर हमें यह समझना उचित नहीं कि ईश्वरत्व सोने या रूपे या पत्थर के समान है, जो मनुष्य की कारीगरी और कल्पना से गढ़े गए हों।" (प्रेरितों के काम 17:29)

"परन्तु दुष्ट से परमेश्वर कहता है : “तुझे मेरी विधियों का वर्णन करने से क्या काम? तू मेरी वाचा की चर्चा क्यों करता है? यह काम तू ने किया, और मैं चुप रहा; इसलिये तू ने समझ लिया कि परमेश्वर बिलकुल मेरे समान है। परन्तु मैं तुझे समझाऊँगा, और तेरी आँखों के सामने सब कुछ अलग अलग दिखाऊँगा।'" (भजन संहिता 50:16,21)

"सब मनुष्य पशु सरीखे ज्ञानरहित हैं; सब सोनारों को अपनी खोदी हुई मूरतों के कारण लज्जित होना पड़ेगा; क्योंकि उनकी ढाली हुई मूरतें धोखा देनेवाली हैं, और उनके कुछ भी साँस नहीं चलती। वे तो व्यर्थ और ठट्ठे ही के योग्य हैं; जब उनके नष्ट किए जाने का समय आएगा, तब वे नष्ट ही होंगी।" (यिर्मयाह 51:17–18)

"क्योंकि गृहदेवता अनर्थ बात कहते और भावी कहनेवाले झूठा दर्शन देखते और झूठे स्वप्न सुनाते, और व्यर्थ शान्ति देते हैं। इस कारण लोग भेड़-बकरियों के समान भटक गए; और चरवाहे न होने के कारण दुर्दशा में पड़े हैं।" (जकर्याह 10:2)

"तुम मूरतों की ओर न फिरना, और देवताओं की प्रतिमाएँ ढालकर न बना लेना; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।" (लैव्यवस्था 19:4)

"वे उसकी विधियाँ, और अपने पुरखाओं के साथ उसकी वाचा, और जो चितौनियाँ उसने उन्हें दी थी, उनको तुच्छ जानकर निकम्मी बातों के पीछे हो लिए; जिससे वे आप निकम्मे हो गए, और अपने चारों ओर की उन

जातियों के पीछे भी हो लिए जिनके विषय यहोवा ने उन्हें आज्ञा दी थी कि उनके से काम न करना।" (2 राजा 17:15)

यदि हम परमेश्वर के उद्धार के उपहार को स्वीकार नहीं करते, तो हमारे पाप का न्याय अनंत मृत्यु है, जो परमेश्वर के राज्य से अलगाव है।

"कोई क्यों न हो जो अपने पिता या माता को शाप दे वह निश्चय मार डाला जाए; उसने अपने पिता या माता को शाप दिया है, इस कारण उसका खून उसी के सिर पर पड़ेगा।" (लैव्यवस्था 20:9)

"जो छिपकर अपने पड़ोसी की चुगली खाए, उसका मैं सत्यानाश करूँगा; जिसकी आँखें चढ़ी हों और जिसका मन घमण्डी है, उसकी मैं न सहूँगा।.... जो छल करता है वह मेरे घर के भीतर न रहने पाएगा; जो झूठ बोलता है वह मेरे सामने बना न रहेगा।" (भजन संहिता 101:5,7)

"इसलिये वे सब प्रकार के अधर्म, और दुष्टता, और लोभ, और बैरभाव से भर गए; और डाह, और हत्या, और झगड़े, और छल, और ईर्ष्या से भरपूर हो गए, और चुगलखोर, बदनाम करनेवाले, परमेश्वर से घृणा करनेवाले, दूसरों का अनादर करनेवाले, अभिमानी, डींगमार, बुरी-बुरी बातों के बनानेवाले, माता पिता की आज्ञा न माननेवाले, निर्बुद्धि, विश्वासघाती, मयारहित और निर्दय हो गए। वे तो परमेश्वर की यह विधि जानते हैं कि ऐसे ऐसे काम करनेवाले मृत्यु के दण्ड के योग्य हैं, तौभी न केवल आप ही ऐसे काम करते हैं वरन् करनेवालों से प्रसन्न भी होते हैं।" (रोमियों 1:29–32)

"क्या तुम नहीं जानते कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे? धोखा न खाओ; न वेश्यागामी, न मूर्तिपूजक, न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरुषगामी, न चोर, न लोभी, न पियक्कड़, न गाली देनेवाले, न अन्धेर करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे।" (1 कुरिन्थियों 6:9–10)

"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।" (रोमियों 6:23)

हमारे पाप हमारी अपनी ज़िम्मेदारी हैं और हम प्रत्येक इसके लिए व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी हैं।

"जो प्राणी पाप करे वही मरेगा, न तो पुत्र पिता के अधर्म का भार उठाएगा और न पिता पुत्र का; धर्मी को अपने ही धर्म का फल, और दुष्ट को अपनी ही दुष्टता का फल मिलेगा।" (यहेजकेल 18:20)

"जब किसी की परीक्षा हो, तो वह यह न कहे कि मेरी परीक्षा परमेश्वर की ओर से होती है; क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है, और न वह किसी की परीक्षा आप करता है। परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर और फँसकर परीक्षा में पड़ता है। फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनती है और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है। हे मेरे प्रिय भाइयो, धोखा न खाओ।" (याकूब 1:13–16)

"क्या वह कुटिल मनुष्यों के लिये विपत्ति और अनर्थ काम करनेवालों के लिये सत्यानाश का कारण नहीं है? क्या वह मेरी गति नहीं देखता और क्या वह मेरे पग पग को नहीं गिनता?" (अय्यूब 31:3–4)

"फिर यहोवा की यह वाणी है : क्या कोई ऐसे गुप्त स्थानों में छिप सकता है, कि मैं उसे न देख सकूँ? क्या स्वर्ग और पृथ्वी दोनों मुझ से परिपूर्ण नहीं हैं?" (यिर्मयाह 23:24)

"हे परमेश्वर, तू तो मेरी मूढ़ता को जानता है, और मेरे दोष तुझ से छिपे नहीं हैं।" (भजन संहिता 69:5)

"सृष्टि की कोई वस्तु उससे छिपी नहीं है वरन् जिस से हमें काम है, उसकी आँखों के सामने सब वस्तुएँ खुली और प्रगट हैं।" (इब्रानियों 4:13)

हमारा पापी स्वभाव परमेश्वर को अप्रसन्न करता है, और हमें यीशु मसीह के माध्यम से उसके उद्धार की आवश्यकता है।

""निष्पाप तो कोई मनुष्य नहीं है : यदि ये भी तेरे विरुद्ध पाप करें, और तू उन पर कोप करके उन्हें शत्रुओं के हाथ कर दे, और वे उनको बन्दी बना कर अपने देश को, चाहे वह दूर हो चाहे निकट, ले जाएँ।" (1 राजा 8:46)

"तू तो उन्हीं से मिलता है जो धर्म के काम हर्ष के साथ करते, और तेरे मार्गों पर चलते हुए तुझे स्मरण करते हैं। देख, तू क्रोधित हुआ था, क्योंकि

हम ने पाप किया; हमारी यह दशा तो बहुत समय से है, क्या हमारा उद्धार हो सकता है?" (यशायाह 64:5)

"तू जाकर उत्तर दिशा में ये बातें प्रचार कर, 'यहोवा की यह वाणी है, हे भटकनेवाली इस्राएल लौट आ, मैं तुझ पर क्रोध की दृष्टि न करूँगा; क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, मैं करुणामय हूँ; मैं सर्वदा क्रोध न रखे रहूँगा। केवल अपना यह अधर्म मान ले कि तू अपने परमेश्वर यहोवा से फिर गई और सब हरे पेड़ों के तले इधर-उधर दूसरों के पास गई, और मेरी बातों को नहीं माना, यहोवा की यह वाणी है।" (यिर्मयाह 3:12–13)

"उस दिन तू कहेगा, "हे यहोवा, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ, क्योंकि यद्यपि तू मुझ पर क्रोधित हुआ था, परन्तु अब तेरा क्रोध शान्त हुआ, और तू ने मुझे शान्ति दी है। "परमेश्वर मेरा उद्धार है, मैं भरोसा रखूँगा और न थरथराऊँगा; क्योंकि प्रभु यहोवा मेरा बल और मेरे भजन का विषय है, और वह मेरा उद्धारकर्ता हो गया है।"" (यशायाह 12:1–2)

5. <u>परमेश्वर का सिद्ध न्याय</u>

परमेश्वर प्रेममय और दयालु है, लेकिन वह अपने न्याय को अनदेखा नहीं कर सकता और हमारे पापों को नहीं छोड़ सकता। इसलिए, हमें उसके उद्धार की आवश्यकता है।

"यहोवा उसके सामने होकर यों प्रचार करता हुआ चला, "यहोवा, यहोवा, ईश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त, और अति करुणामय और सत्य, हज़ारों पीढ़ियों तक निरन्तर करुणा करनेवाला, अधर्म और अपराध और पाप का क्षमा करनेवाला है, परन्तु दोषी को वह किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा; वह पितरों के अधर्म का दण्ड उनके बेटों वरन् पोतों और परपोतों को भी देनेवाला है।" (निर्गमन 34:6–7)

"कि यहोवा कोप करने में धीरजवन्त और अति करुणामय है, और अधर्म और अपराध का क्षमा करनेवाला है, परन्तु वह दोषी को किसी प्रकार से निर्दोष न ठहराएगा, और पूर्वजों के अधर्म का दण्ड उनके बेटों, और पोतों, और परपोतों को देता है।" (गिनती 14:18)

"यहोवा विलम्ब से क्रोध करनेवाला और बड़ा शक्तिमान है; वह दोषी को किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा। यहोवा बवण्डर और आँधी में होकर चलता है, और बादल उसके पाँवों की धूल हैं।" (नहूम 1:3)

“वह चट्टान है, उसका काम खरा है; और उसकी सारी गति न्याय की है। वह सच्चा ईश्वर है, उसमें कुटिलता नहीं, वह धर्मी और सीधा है।" (व्यवस्थाविवरण 32:4)

"तुम लोगों ने अपनी बातों से यहोवा को उकता दिया है। तौभी पूछते हो, “हम ने किस बात में उसे उकता दिया?” इसमें कि तुम कहते हो, “जो कोई बुरा करता है, वह यहोवा की दृष्टि में अच्छा लगता है, और वह ऐसे लोगों से प्रसन्न रहता है;” और यह कि, “न्यायी परमेश्वर कहाँ है?" (मलाकी 2:17)

"यदि हम कहें कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आप को धोखा देते हैं, और हम में सत्य नहीं।" (1 यूहन्ना 1:8)

"तू कहती है, ‘मैं निर्दोष हूँ; निश्चय उसका क्रोध मुझ पर से हट जाएगा।’ देख, तू जो कहती है, ‘मैं ने पाप नहीं किया,’ इसलिये मैं तेरा न्याय कराऊँगा।'" (यिर्मयाह 2:35)

परमेश्वर दयालु है और उसने उद्धार प्रदान किया है, लेकिन उसके भयानक न्याय को देखकर हमें भयभीत भी होना अवश्य है।

"इसलिये परमेश्वर की कृपा और कड़ाई को देख! जो गिर गए उन पर कड़ाई, परन्तु तुझ पर कृपा, यदि तू उसमें बना रहे, नहीं तो तू भी काट डाला जाएगा।" (रोमियों 11:22)

"क्योंकि मैं मार्ग के शत्रुओं से बचने के लिये सिपाहियों का दल और सवार राजा से माँगने से लजाता था, क्योंकि हम राजा से यह कह चुके थे, “हमारा परमेश्वर अपने सब खोजियों पर, भलाई के लिये कृपादृष्टि रखता है और जो उसे त्याग देते हैं, उसका बल और कोप उनके विरुद्ध है।" (एज्रा 8:22)

"तेरे भय से मेरा शरीर काँप उठता है, और मैं तेरे नियमों से डरता हूँ।" (भजन संहिता 119:120)

"जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उनसे मत डरना; पर उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नष्ट कर सकता है।" (मत्ती 10:28)

""हे प्रभु, कौन तुझ से न डरेगा और तेरे नाम की महिमा न करेगा? क्योंकि केवल तू ही पवित्र है। सारी जातियाँ आकर तेरे सामने दण्डवत् करेंगी, क्योंकि तेरे न्याय के काम प्रगट हो गए हैं।" (प्रकाशितवाक्य 15:4)

"यहोवा का भय मानना बुद्धि का मूल है; बुद्धि और शिक्षा को मूढ़ ही लोग तुच्छ जानते हैं।" (नीतिवचन 1:7)

"यहोवा का भय मानने से जीवन बढ़ता है; और उसका भय माननेवाला ठिकाना पाकर सुखी रहता है; उस पर विपत्ति नहीं पड़ने की।" (नीतिवचन 19:23)

"अधर्म का प्रायश्चित्त कृपा, और सच्चाई से होता है, और यहोवा के भय मानने के द्वारा मनुष्य बुराई करने से बच जाते हैं।" (नीतिवचन 16:6)

यीशु मसीह स्वयं न्यायाधीश हैं, और उन्होंने अपने न्याय के नियम पहले ही बता दिए हैं।

"क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है, और उसे मरे हुओं में से जिलाकर यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।" (प्रेरितों के काम 17:31)

"यह यहोवा के सामने हो, क्योंकि वह आनेवाला है। वह पृथ्वी का न्याय करने को आनेवाला है, वह धर्म से जगत का, और सच्चाई से देश देश के लोगों का न्याय करेगा।" (भजन संहिता 96:13)

"जो वचन उसने इस्राएलियों के पास भेजा, जब उसने यीशु मसीह के द्वारा (जो सब का प्रभु है) शान्ति का सुसमाचार सुनाया, ... और उसने हमें आज्ञा दी कि लोगों में प्रचार करो और गवाही दो, कि यह वही है जिसे परमेश्वर ने जीवतों और मरे हुओं का न्यायी ठहराया है।" (प्रेरितों के काम 10:36,42)

"परन्तु परमेश्वर ही न्यायी है, वह एक को घटाता और दूसरे को बढ़ाता है।" (भजन संहिता 75:7)

"बुरे काम के दण्ड की आज्ञा फुर्ती से नहीं दी जाती; इस कारण मनुष्यों का मन बुरा काम करने की इच्छा से भरा रहता है।" (सभोपदेशक 8:11)

""यहोवा यों कहता है : यहोवा के भवन के आँगन में खड़ा होकर, यहूदा के सब नगरों के लोगों के सामने जो यहोवा के भवन में दण्डवत् करने को आएँ, ये वचन जिनके विषय उनसे कहने की आज्ञा मैं तुझे देता हूँ कह दे; उनमें से कोई वचन मत रख छोड़। सम्भव है कि वे सुनकर अपनी अपनी बुरी चाल से फिरें और मैं उनकी हानि करने से पछताऊँ जो उनके बुरे कामों के कारण मैं ने ठाना था।'" (यिर्मयाह 26:2–3)

"प्रभु यहोवा की यह वाणी है, हे इस्राएल के घराने, मैं तुम में से हर एक मनुष्य का न्याय उसके चालचलन के अनुसार ही करूँगा। पश्चाताप करो और अपने सब अपराधों को छोड़ो, तभी तुम्हारा अधर्म तुम्हारे ठोकर खाने का कारण न होगा।'" (यहेजकेल 18:30)

"जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिये कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।" (यूहन्ना 3:18)

परमेश्वर ने अपने प्रेम में अनन्त मृत्यु से बचने का मार्ग प्रदान किया है और हमें चेतावनी दी है। यदि हम उसके शत्रु हैं, तो वह हमारी अपनी पसंद है, उसकी नहीं।

"वही हमारे लिये बचानेवाला परमेश्वर ठहरा; यहोवा प्रभु मृत्यु से भी बचाता है। निश्चय परमेश्वर अपने शत्रुओं के सिर पर, और जो अधर्म के मार्ग पर चलता रहता है, उसकी बाल भरी खोपड़ी पर मार मार के उसे चूर करेगा।" (भजन संहिता 68:20–21)

"तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिन्त रहकर कैसे बच सकते हैं? जिसकी चर्चा पहले-पहल प्रभु के द्वारा हुई, और सुननेवालों के द्वारा हमें इसका निश्चय हुआ।" (इब्रानियों 2:3)

"वरन् हम ने अपने मन में समझ लिया था कि हम पर मृत्यु की आज्ञा हो चुकी है, ताकि हम अपना भरोसा न रखें वरन् परमेश्वर का जो मरे हुओं को जिलाता है। उसी ने हमें मृत्यु के ऐसे बड़े संकट से बचाया, और बचाएगा; और उस पर हमारी यह आशा है कि वह आगे को भी बचाता रहेगा।" (2 कुरिन्थियों 1:9–10)

"हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन; मेरे गिड़गिड़ाने की ओर कान लगा! तू जो सच्चा और धर्मी है, इसलिये मेरी सुन ले, और अपने दास से मुक़द्दमा न चला! क्योंकि कोई प्राणी तेरी दृष्टि में निर्दोष नहीं ठहर सकता।" (भजन संहिता 143:1–2)

"हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तू अपने धर्म के अनुसार मेरा न्याय चुका; और उन्हें मेरे विरुद्ध आनन्द करने न दे!" (भजन संहिता 35:24)

"हे परमेश्वर अपने नाम के द्वारा मेरा उद्धार कर, और अपने पराक्रम से मेरा न्याय कर।" (भजन संहिता 54:1)

"यहोवा का नाम दृढ़ गढ़ है, धर्मी उसमें भागकर सब दुर्घटनाओं से बचता है।" (नीतिवचन 18:10)

"पर तू अपनी कठोरता और हठीले मन के कारण उसके क्रोध के दिन के लिये, जिसमें परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रगट होगा, अपने लिये क्रोध कमा रहा है। वह हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला देगा।" (रोमियों 2:5–6)

6. <u>परमेश्वर का अद्भुत प्रेम</u>

परमेश्वर प्रेममय, दयालु, अनुग्रहकारी, धैर्यवान और क्षमाशील है, जो किसी भी तुलना से परे है।

"जो प्रेम नहीं रखता वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।" (1 यूहन्ना 4:8)

"यहोवा दयालु और अनुग्रहकारी, विलम्ब से कोप करनेवाला और अति करुणामय है।" (भजन संहिता 103:8)

"हे यहोवा, तेरी दया तो बड़ी है; इसलिये अपने नियमों के अनुसार मुझे जिला।" (भजन संहिता 119:156)

"परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है, अपने उस बड़े प्रेम के कारण जिस से उसने हम से प्रेम किया।" (इफिसियों 2:4)

"और आज्ञा मानने से इन्कार किया, और जो आश्चर्यकर्म तू ने उनके बीच किए थे, उनका स्मरण न किया, वरन् हठ करके यहाँ तक बलवा करनेवाले बने, कि एक प्रधान ठहराया कि अपने दासत्व की दशा में लौटें। परन्तु तू

क्षमा करनेवाला अनुग्रहकारी और दयालु, विलम्ब से कोप करनेवाला, और अतिकरुणामय ईश्वर है, तू ने उनको न त्यागा।" (नहेम्याह 9:17)
"कि उसके लोगों को उद्धार का ज्ञान दे, जो उनके पापों की क्षमा से प्राप्त होता है। यह हमारे परमेश्वर की उसी बड़ी करुणा से होगा; जिसके कारण ऊपर से हम पर भोर का प्रकाश उदय होगा।" (लूका 1:77–78)
"तेरे समान ऐसा परमेश्वर कहाँ है जो अधर्म को क्षमा करे और अपने निज भाग के बचे हुओं के अपराध को ढाँप दे? वह अपने क्रोध को सदा बनाए नहीं रहता, क्योंकि वह करुणा से प्रीति रखता है।" (मीका 7:18)
"उसने यहोवा से यह कहकर प्रार्थना की, “हे यहोवा, जब मैं अपने देश में था, तब क्या मैं यही बात न कहता था? इसी कारण मैं ने तेरी आज्ञा सुनते ही तर्शीश को भाग जाने के लिये फुर्ती की; क्योंकि मैं जानता था कि तू अनुग्रहकारी और दयालु परमेश्वर है, और विलम्ब से कोप करनेवाला करुणानिधान है, और दु:ख देने से प्रसन्न नहीं होता।" (योना 4:2)

परमेश्वर हमसे प्रेम करता है और हमारे साथ संबंध रखना चाहता है, लेकिन यह केवल यीशु पर विश्वास करने की आज्ञा का पालन करके संभव है।
"जो आज्ञा मैं तुम्हें देता हूँ, यदि उसे मानो तो तुम मेरे मित्र हो।" (यूहन्ना 15:14)
"परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।" (यूहन्ना 1:12)
"तौभी इस्राएलियों की गिनती समुद्र की बालू की सी हो जाएगी, जिनका मापना-गिनना अनहोना है; और जिस स्थान में उनसे यह कहा जाता था, “तुम मेरी प्रजा नहीं हो,” उसी स्थान में वे जीवित परमेश्वर के पुत्र कहलाएँगे।'" (होशे 1:10)
"जो कुछ हम ने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं, इसलिये कि तुम भी हमारे साथ सहभागी हो; और हमारी यह सहभागिता पिता के साथ और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है।" (1 यूहन्ना 1:3)

परमेश्वर ने हमारे पापों के लिए अपने न्याय को संतुष्ट किया (प्रायश्चित) और अपने प्रेम को इस प्रकार दिखाया कि उसने हमारे लिए मृत्यु का दंड स्वयं सहा।

"जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, वह इस से प्रगट हुआ कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है कि हम उसके द्वारा जीवन पाएँ। प्रेम इस में नहीं कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया, पर इस में है कि उसने हम से प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेजा।" (1 यूहन्ना 4:9–10)

"परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।" (रोमियों 5:8)

"हे भाइयो, अब मैं तुम्हें वही सुसमाचार बताता हूँ जो पहले सुना चुका हूँ, जिसे तुम ने अंगीकार भी किया था और जिसमें तुम स्थिर भी हो।.... इसी कारण मैं ने सब से पहले तुम्हें वही बात पहुँचा दी, जो मुझे पहुँची थी कि पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया, और गाड़ा गया, और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा,.... फिर वह पाँच सौ से अधिक भाइयों को एक साथ दिखाई दिया, जिनमें से बहुत से अब तक जीवित हैं पर कुछ सो गए।" (1 कुरिन्थियों 15:1, 3-4, 6)

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना 3:16)

यीशु का, स्वयं का जीवन किसी अन्य के द्वारा छीना या लिया नहीं गया, बल्कि उसने प्रेम में होकर इसे हमारे लिए स्वेच्छा से दिया।

"कोई उसे मुझ से छीनता नहीं, वरन् मैं उसे आप ही देता हूँ। मुझे उसके देने का भी अधिकार है, और उसे फिर ले लेने का भी अधिकार है : यह आज्ञा मेरे पिता से मुझे मिली है।" (यूहन्ना 10:18)

"हम ने प्रेम इसी से जाना कि उसने हमारे लिये अपने प्राण दे दिए; और हमें भी भाइयों के लिये प्राण देना चाहिए।" (1 यूहन्ना 3:16)

"मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है; और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिये अपने आप को दे दिया।" (गलातियों 2:20)

"और प्रेम में चलो जैसे मसीह ने भी तुम से प्रेम किया, और हमारे लिये अपने आप को सुखदायक सुगन्ध के लिये परमेश्वर के आगे भेंट करके बलिदान कर दिया।" (इफिसियों 5:2)

7. यीशु, हमारे परमेश्वर और उद्धारकर्ता हैं

यीशु सदा से परमेश्वर का पुत्र रहे हैं, और प्रेम में उन्होंने मनुष्य बनकर हमें उद्धार (जीवन की रोटी) देने के लिए स्वयं को नम्र किया।

"मैं ही एप्रैम को पाँव-पाँव चलाता था, और उनको गोद में लिए फिरता था; परन्तु वे न जानते थे कि उनका चंगा करनेवाला मैं हूँ। मैं उनको मनुष्य जानकर प्रेम की डोरी से खींचता था, और जैसा कोई बैल के गले की जोत खोलकर उसके सामने आहार रख दे, वैसा ही मैं ने उनसे किया।" (होशे 11:3–4)

"फिर यहोवा ने कहा, “मैं ने अपनी प्रजा के लोग जो मिस्र में हैं, उनके दुःख को निश्चय देखा है; और उनकी जो चिल्लाहट परिश्रम करानेवालों के कारण होती है उसको भी मैं ने सुना है, और उनकी पीड़ा पर मैं ने चित्त लगाया है; इसलिये अब मैं उतर आया हूँ कि उन्हें मिस्रियों के वश से छुड़ाऊँ, और उस देश से निकालकर एक अच्छे और बड़े देश में, जिसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं, अर्थात् कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी, हिब्बी, और यबूसी लोगों के स्थान में पहुँचाऊँ।'" (निर्गमन 3:7–8)

"यीशु ने उनको उत्तर दिया, “आपस में मत कुड़कुड़ाओ..... जीवन की रोटी जो स्वर्ग से उतरी, मैं हूँ। यदि कोई इस रोटी में से खाए, तो सर्वदा जीवित रहेगा; और जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिये दूँगा, वह मेरा मांस है।'" (यूहन्ना 6:43,51)

"आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। .... और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर

हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।" (यूहन्ना 1:1,14)

"पुरखे भी उन्हीं के हैं, और मसीह भी शरीर के भाव से उन्हीं में से हुआ जो सब के ऊपर परम परमेश्वर युगानुयुग धन्य हो। आमीन।" (रोमियों 9:5)

"इसमें सन्देह नहीं कि भक्ति का भेद गम्भीर है, अर्थात्, वह जो शरीर में प्रगट हुआ, आत्मा में धर्मी ठहरा, स्वर्गदूतों को दिखाई दिया, अन्यजातियों में उसका प्रचार हुआ, जगत में उस पर विश्वास किया गया, और महिमा में ऊपर उठाया गया।" (1 तीमुथियुस 3:16)

"क्योंकि उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है।" (कुलुस्सियों 2:9)

"पर जब हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की कृपा और मनुष्यों पर उसका प्रेम प्रगट हुआ।" (तीतुस 3:4)

"शमौन पतरस की ओर से, जो यीशु मसीह का दास और प्रेरित है, उन लोगों के नाम जिन्होंने हमारे परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की धार्मिकता द्वारा हमारे समान बहुमूल्य विश्वास प्राप्त किया है।" (2 पतरस 1:1)

"परमेश्वर तो प्राचीनकाल से मेरा राजा है, वह पृथ्वी पर उद्धार के काम करता आया है।" (भजन संहिता 74:12)

यीशु ने अपने को परमेश्वर दिखाया जब उन्होंने परमेश्वर का नाम "मैं हूँ" ग्रहण किया और थोमा के द्वारा उन्हें "मेरा प्रभु और मेरा परमेश्वर" कहे जाने को स्वीकार किया।

"परमेश्वर ने मूसा से कहा, "मैं जो हूँ सो हूँ।" फिर उसने कहा, "तू इस्राएलियों से यह कहना, 'जिसका नाम मैं हूँ है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है'।" (निर्गमन 3:14)

"यहूदियों ने उससे कहा, "अब तक तू पचास वर्ष का नहीं, फिर भी तू ने अब्राहम को देखा है?" यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूँ।" तब उन्होंने उसे मारने के लिये पत्थर उठाए,परन्तु यीशु छिपकर मन्दिर से निकल गया।" (यूहन्ना 8:57–59)

"तब उसने थोमा से कहा, "अपनी उँगली यहाँ लाकर मेरे हाथों को देख और अपना हाथ लाकर मेरे पंजर में डाल, और अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो।" यह सुन थोमा ने उत्तर दिया, "हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!" यीशु ने उससे कहा, "तू ने मुझे देखा है, क्या इसलिये विश्वास किया है? धन्य वे हैं जिन्होंने बिना देखे विश्वास किया।'" (यूहन्ना 20:27–29)

यीशु मनुष्य बने ताकि वह हमारे पापों के दंड को उठा सकें। वह हमारे लिए मध्यस्थ बने क्योंकि वह परमेश्वर और मनुष्य दोनों थे।

"इस कारण उस को चाहिए था, कि सब बातों में अपने भाइयों के समान बने; जिससे वह उन बातों में जो परमेश्वर से सम्बन्ध रखती हैं, एक दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक बने ताकि लोगों के पापों के लिये प्रायश्चित करे।" (इब्रानियों 2:17)

"क्योंकि परमेश्वर एक ही है, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है। जिसने अपने आप को सब के छुटकारे के दाम में दे दिया, और उसकी गवाही ठीक समय पर दी गई।" (1 तीमुथियुस 2:5–6)

प्रभु यीशु मसीह, हमारा धर्मी परमेश्वर, जिसने प्रेमपूर्वक हमारे पापों को उठाया ताकि हम उसके साथ जीवित रह सकें, केवल वही उद्धारकर्ता और केवल वही उद्धार का मार्ग है।

"यहोवा की वाणी है, "तुम मेरे साक्षी हो और मेरे दास हो, जिन्हें मैं ने इसलिये चुना है कि समझकर मेरी प्रतीति करो और यह जान लो कि मैं वही हूँ। मुझ से पहले कोई परमेश्वर न हुआ और न मेरे बाद कोई होगा। मैं ही यहोवा हूँ और मुझे छोड़ कोई उद्धारकर्ता नहीं।" (यशायाह 43:10–11)

"तुम प्रचार करो और उनको लाओ; हाँ, वे आपस में सम्मति करें, किसने प्राचीनकाल से यह प्रगट किया? किस ने प्राचीनकाल में इसकी सूचना पहले ही से दी? क्या मैं यहोवा ही ने यह नहीं किया? इसलिये मुझे छोड़ कोई और दूसरा परमेश्वर नहीं है, धर्मी और उद्धारकर्ता परमेश्वर मुझे छोड़ और कोई नहीं है।" (यशायाह 45:21)

"'लोग मेरे विषय में कहेंगे, केवल यहोवा ही में धर्म और शक्ति है। उसी के पास लोग आएँगे, और जो उससे रूठे रहेंगे, उन्हें लज्जित होना पड़ेगा।" (यशायाह 45:24)

"तो तुम सब और सारे इस्राएली लोग जान लें कि यीशु मसीह नासरी के नाम से जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, और परमेश्वर ने मरे हुओं में से जिलाया, यह मनुष्य तुम्हारे सामने भला चंगा खड़ा है। ... किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।" (प्रेरितों के काम 4:10,12)

"परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।" (यूहन्ना 20:31)

यीशु ने अपने प्रेम में हमें गलत मार्गों से बचाने में सहायता की, यह बताते हुए कि वही एकमात्र उद्धारकर्ता और उद्धार का एकमात्र मार्ग हैं।

"यीशु ने उससे कहा, "मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।'" (यूहन्ना 14:6)

"तब यीशु ने उनसे फिर कहा, "मैं तुम से सच सच कहता हूँ, भेड़ों का द्वार मैं हूँ।.... द्वार मैं हूँ; यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे, तो उद्धार पाएगा, और भीतर बाहर आया जाया करेगा और चारा पाएगा।" (यूहन्ना 10:7,9)

"यीशु ने फिर लोगों से कहा, "जगत की ज्योति मैं हूँ; जो मेरे पीछे हो लेगा वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।'" (यूहन्ना 8:12)

"इसलिये मैं ने तुम से कहा कि तुम अपने पापों में मरोगे, क्योंकि यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूँ तो अपने पापों में मरोगे।" (यूहन्ना 8:24)

परमेश्वर की आज्ञा से पीतल के सर्प को खड़ा किया गया, जो यीशु के द्वारा हमारे पापों को क्रूस पर उठाने का प्रतीक था। उद्धार पाने के लिए, हमें उसकी ओर देखना (उन पर विश्वास करना) चाहिए।

"अत: मूसा ने पीतल का एक साँप बनवाकर खम्भे पर लटकाया; तब साँप के डसे हुओं में से जिस जिस ने उस पीतल के साँप की ओर देखा वह जीवित बच गया।" (गिनती 21:9)

"यह सुनकर यीशु ने उससे कहा, “तू इस्राएलियों का गुरु होकर भी क्या इन बातों को नहीं समझता? .... और जिस रीति से मूसा ने जंगल में साँप को ऊँचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए; ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह अनन्त जीवन पाए।'" (यूहन्ना 3:10,14–15)

"क्योंकि मेरे पिता की इच्छा यह है कि जो कोई पुत्र को देखे और उस पर विश्वास करे, वह अनन्त जीवन पाए; और मैं उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊँगा।" (यूहन्ना 6:40)

"हे पृथ्वी के दूर दूर के देश के रहनेवालो, तुम मेरी ओर फिरो और उद्धार पाओ! क्योंकि मैं ही परमेश्वर हूँ और दूसरा कोई और नहीं है।" (यशायाह 45:22)

"वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिससे हम पापों के लिये मरकर धार्मिकता के लिये जीवन बिताएँ : उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए।" (1 पतरस 2:24)

8. <u>यीशु ने हमारे लिए सब कुछ किया</u>

यीशु ने हमारे उद्धार का सारा कार्य पूरा किया, और इसमें कुछ भी जोड़ने या योगदान देने के लिए हमारे पास कुछ नहीं है।

"वह उसकी महिमा का प्रकाश और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ्य के वचन से संभालता है। वह पापों को धोकर ऊँचे स्थानों पर महामहिमन् के दाहिने जा बैठा।" (इब्रानियों 1:3)

"नहीं तो जगत की उत्पत्ति से लेकर उसको बार-बार दु:ख उठाना पड़ता; पर अब युग के अन्त में वह एक ही बार प्रगट हुआ है, ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दे।" (इब्रानियों 9:26)

"मैं जानता हूँ कि जो कुछ परमेश्वर करता है वह सदा स्थिर रहेगा; न तो उसमें कुछ बढ़ाया जा सकता है और न कुछ घटाया जा सकता है; परमेश्वर ऐसा इसलिये करता है कि लोग उसका भय मानें।" (सभोपदेशक 3:14)
"तब मैं ने फिर से अपने हाथों के सब कामों को, और अपने सब परिश्रम को देखा, तो क्या देखा कि सब कुछ व्यर्थ और वायु को पकड़ना है, और संसार में कोई लाभ नहीं।" (सभोपदेशक 2:11)
"तू मुझे बुलाता, और मैं बोलता; तुझे अपने हाथ के बनाए हुए काम की अभिलाषा होती।" (अय्यूब 14:15)
"परन्तु मैं तो परमेश्वर के भवन में हरे जैतून के वृक्ष के समान हूँ। मैं ने परमेश्वर की करुणा पर सदा सर्वदा के लिये भरोसा रखा है। मैं तेरा धन्यवाद सर्वदा करता रहूँगा, क्योंकि तू ही ने यह काम किया है। मैं तेरे ही नाम की बाट जोहता रहूँगा, क्योंकि यह तेरे पवित्र भक्तों के सामने उत्तम है।" (भजन संहिता 52:8–9)
"शत्रुओं के विरुद्ध हमारी सहायता कर, क्योंकि मनुष्य का किया हुआ छुटकारा व्यर्थ है! परमेश्वर की सहायता से हम वीरता दिखाएँगे; हमारे शत्रुओं को वही रौंदेगा।" (भजन संहिता 108:12–13)
"हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मेरी सहायता कर! अपनी करुणा के अनुसार मेरा उद्धार कर! जिस से वे जानें कि यह तेरा काम है, और हे यहोवा, तू ही ने यह किया है!" (भजन संहिता 109:26–27)
"हे यहोवा, तू मेरा परमेश्वर है; मैं तुझे सराहूँगा, मैं तेरे नाम का धन्यवाद करूँगा; क्योंकि तू ने आश्चर्यकर्म किए हैं, तू ने प्राचीनकाल से पूरी सच्चाई के साथ युक्तियाँ की हैं।" (यशायाह 25:1)
"परन्तु जो काम नहीं करता वरन् भक्तिहीन के धर्मी ठहरानेवाले पर विश्वास करता है, उसका विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना जाता है। जिसे परमेश्वर बिना कर्मों के धर्मी ठहराता है, उसे दाऊद भी धन्य कहता है।" (रोमियों 4:5–6)

केवल यीशु का कार्य हमें, हमारे सभी पापों–भूतकाल, वर्तमान और भविष्य–से बचाने के लिए पर्याप्त था।

"तेरे बैरी आग से भस्म होंगे। हे यहोवा, तू हमारे लिये शान्ति ठहराएगा, हमने जो कुछ किया है उसे तू ही ने हमारे लिये किया है।" (यशायाह 26:12)

"मैं परमप्रधान परमेश्वर को पुकारूँगा, परमेश्वर को, जो मेरे लिये सब कुछ सिद्ध करता है।" (भजन संहिता 57:2)

"ईश्वर की गति खरी है; यहोवा का वचन ताया हुआ है; वह अपने सब शरणागतों की ढाल है। "यहोवा को छोड़ क्या कोई ईश्वर है? हमारे परमेश्वर को छोड़ क्या और कोई चट्टान है? यह वही ईश्वर है, जो मेरा अति दृढ़ क़िला है, वह खरे मनुष्य को अपने मार्ग में लिए चलता है।" (2 शमूएल 22:31–33)

"परन्तु यह व्यक्ति तो पापों के बदले एक ही बलिदान सर्वदा के लिये चढ़ाकर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा, ... क्योंकि उसने एक ही चढ़ावे के द्वारा उन्हें जो पवित्र किए जाते हैं, सर्वदा के लिये सिद्ध कर दिया है।" (इब्रानियों 10:12,14)

"इसी लिये जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उनके लिये विनती करने को सर्वदा जीवित है।" (इब्रानियों 7:25)

"हम मसीह के द्वारा परमेश्वर पर ऐसा ही भरोसा रखते हैं। 5यह नहीं कि हम अपने आप से इस योग्य हैं कि अपनी ओर से किसी बात का विचार कर सकें, पर हमारी योग्यता परमेश्वर की ओर से है।" (2 कुरिन्थियों 3:4–5)

"और तुम उसी में भरपूर हो गए हो जो सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि है।" (कुलुस्सियों 2:10)

"मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जो कोई विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसी का है।" (यूहन्ना 6:47)

यह उद्धार पूरी तरह और स्वतंत्र रूप से यीशु के कार्य और उसकी धार्मिकता के द्वारा प्रदान किया गया।

"और वे धन्यवादबलि चढ़ाएँ, और जयजयकार करते हुए, उसके कामों का वर्णन करें।" (भजन संहिता 107:22)

"परन्तु परमेश्वर के समीप रहना, यही मेरे लिये भला है; मैं ने प्रभु यहोवा को अपना शरणस्थान माना है, जिस से मैं तेरे सब कामों का वर्णन करूँ।" (भजन संहिता 73:28)

"आओ परमेश्वर के कामों को देखो; वह अपने कार्यों के कारण मनुष्यों को भययोग्य देख पड़ता है।" (भजन संहिता 66:5)

"क्योंकि, हे यहोवा, तू ने मुझ को अपने काम से आनन्दित किया है; और मैं तेरे हाथों के कामों के कारण जयजयकार करूँगा।" (भजन संहिता 92:4)

"बहुत से मनुष्य अपनी कृपा का प्रचार करते हैं; परन्तु सच्चा पुरुष कौन पा सकता है?" (नीतिवचन 20:6)

"हे ईश्वर मेरी रक्षा कर, क्योंकि मैं तेरा ही शरणागत हूँ। मैंने परमेश्वर से कहा, “तू ही मेरा प्रभु है; तेरे सिवा मेरी भलाई कहीं नहीं।" (भजन संहिता 16:1–2)

"उस समय उनका परमेश्वर यहोवा उनको अपनी प्रजारूपी भेड़-बकरियाँ जानकर उनका उद्धार करेगा; और वे मुकुटमणि ठहरके, उसकी भूमि से बहुत ऊँचे पर चमकते रहेंगे। उसका क्या ही कुशल, और क्या ही शोभा उसकी होगी! उसके जवान लोग अन्न खाकर, और कुमारियाँ नया दाखमधु पीकर हृष्टपुष्ट हो जाएँगी।" (जकर्याह 9:16–17)

"आहा, तेरी भलाई क्या ही बड़ी है जो तू ने अपने डरवैयों के लिये रख छोड़ी है, और अपने शरणागतों के लिये मनुष्यों के सामने प्रगट भी की है।" (भजन संहिता 31:19)

"यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है, और उसकी करुणा सदा की है।" (भजन संहिता 136:1)

"मैं याजकों को चिकनी वस्तुओं से अति तृप्त करूँगा, और मेरी प्रजा मेरे उत्तम दानों से सन्तुष्ट होगी," यहोवा की यही वाणी है। (यिर्मयाह 31:14)

"जिस मनुष्य में से दुष्टात्माएँ निकली थीं वह उससे विनती करने लगा कि मुझे अपने साथ रहने दे, परन्तु यीशु ने उसे विदा करके कहा, "अपने घर को लौट जा और लोगों से बता कि परमेश्वर ने तेरे लिये कैसे बड़े बड़े काम किए हैं।" वह जाकर सारे नगर में प्रचार करने लगा कि यीशु ने मेरे लिये कैसे बड़े-बड़े काम किए।'" (लूका 8:38–39)

हमारी अपनी कोई धार्मिकता नहीं है, परन्तु हम परमेश्वर की धार्मिकता के अधीन होकर धार्मिकता प्राप्त कर सकते हैं।

"इसलिये कि मसीह ने भी, अर्थात् अधर्मियों के लिये धर्मी ने, पापों के कारण एक बार दु:ख उठाया, ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुँचाए; वह शरीर के भाव से तो घात किया गया, पर आत्मा के भाव से जिलाया गया।" (1 पतरस 3:18)

"क्योंकि वे परमेश्वर की धार्मिकता से अनजान होकर, और अपनी धार्मिकता स्थापित करने का यत्न करके, परमेश्वर की धार्मिकता के अधीन न हुए। क्योंकि हर एक विश्वास करनेवाले के लिये धार्मिकता के निमित्त मसीह व्यवस्था का अन्त है।" (रोमियों 10:3–4)

"इसलिये पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी।" (मत्ती 6:33)

"यहोवा की यह भी वाणी है : देख ऐसे दिन आते हैं जब मैं दाऊद के कुल में एक धर्मी अंकुर उगाऊँगा, और वह राजा बनकर बुद्धि से राज्य करेगा, और अपने देश में न्याय और धर्म से प्रभुता करेगा। उसके दिनों में यहूदी लोग बचे रहेंगे, और इस्राएली लोग निडर बसे रहेंगे। और यहोवा उसका नाम "यहोवा हमारी धार्मिकता" रखेगा।'" (यिर्मयाह 23:5–6)

"यहोवा ने हमारे धर्म के काम प्रगट किए हैं; अत: आओ, हम सिय्योन में अपने परमेश्वर यहोवा के काम का वर्णन करें।" (यिर्मयाह 51:10)

"मैं अपने मुँह से तेरे धर्म का, और तेरे किए हुए उद्धार का वर्णन दिन भर करता रहूँगा, क्योंकि उनका पूरा ब्योरा मेरी समझ से परे है। मैं प्रभु यहोवा के पराक्रम के कामों का वर्णन करता हुआ आऊँगा, मैं केवल तेरे ही धर्म की चर्चा किया करूँगा।" (भजन संहिता 71:15–16)

उद्धार सम्पूर्णता से परमेश्वर की कृपा और दया भरा हुआ एक मुफ्त उपहार है, जिसमें हमारे लिए कोई योग्यता या अभिमान का कारण नहीं है।
"क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया, तो जो लोग अनुग्रह और धर्मरूपी वरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगे।" (रोमियों 5:17)
"परमेश्वर का, उसके उस दान के लिये जो वर्णन से बाहर है, धन्यवाद हो।" (2 कुरिन्थियों 9:15)
"क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है, और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।" (इफिसियों 2:8–9)
"मूसा ने लोगों से कहा, “डरो मत, खड़े खड़े वह उद्धार का काम देखो, जो यहोवा आज तुम्हारे लिये करेगा; क्योंकि जिन मिस्रियों को तुम आज देखते हो, उनको फिर कभी न देखोगे। यहोवा आप ही तुम्हारे लिये लड़ेगा, इसलिये तुम चुपचाप रहो।" (निर्गमन 14:13–14)
"हम को उसमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है।" (इफिसियों 1:7)
"यदि यह अनुग्रह से हुआ है, तो फिर कर्मों से नहीं; नहीं तो अनुग्रह फिर अनुग्रह नहीं रहा।" (रोमियों 11:6)
"तो उसने हमारा उद्धार किया; और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार नए जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ।" (तीतुस 3:5)

यीशु के पास क्रूस पर लटके दो अपराधियों में से एक पहले उसका अपमान कर रहा था, परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से मरने से ठीक पहले उसने अपना हृदय-परिवर्तन किया, और यीशु ने दिखाया कि वह उद्धार पा गया है, यह कहते हुए कि वह स्वर्ग में होगा।

"तब उसके साथ दो डाकू एक दाहिने और एक बाएँ, क्रूसों पर चढ़ाए गए।... इसी प्रकार डाकू भी जो उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे, उसकी निन्दा करते थे।" (मत्ती 27:38,44)

"जो कुकर्मी वहाँ लटकाए गए थे, उनमें से एक ने उसकी निन्दा करके कहा, "क्या तू मसीह नहीं? तो फिर अपने आप को और हमें बचा!" इस पर दूसरे ने उसे डाँटकर कहा, "क्या तू परमेश्वर से भी नहीं डरता? तू भी तो वही दण्ड पा रहा है, और हम तो न्यायानुसार दण्ड पा रहे हैं, क्योंकि हम अपने कामों का ठीक फल पा रहे हैं; पर इसने कोई अनुचित काम नहीं किया।" तब उसने कहा, "हे यीशु, जब तू अपने राज्य में आए, तो मेरी सुधि लेना।" उसने उससे कहा, "मैं तुझ से सच कहता हूँ कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।'" (लूका 23:39–43)

क्रूस पर कहे गए अपने वचनों के द्वारा, यीशु ने दिखाया कि अपनी प्रेम के अनुसार, उसने हमारे उद्धार का कार्य पूरी तरह से समाप्त कर दिया।

"जब यीशु ने वह सिरका लिया, तो कहा, "पूरा हुआ"; और सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए।" (यूहन्ना 19:30)

"मसीह ने जो हमारे लिये शापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के शाप से छुड़ाया, क्योंकि लिखा है, "जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह शापित है।" (गलातियों 3:13)

"हे यहोवा, तू ने मेरा मुक़द्दमा लड़कर मेरा प्राण बचा लिया है।" (विलापगीत 3:58)

यीशु का पुनरुत्थान दिखाता है कि उसने पापरहित जीवन जिया और हमारे पापों के दण्ड को सहने के लिए स्वीकार किया गया।

"वह हमारे अपराधों के लिये पकड़वाया गया, और हमारे धर्मी ठहरने के लिये जिलाया भी गया।" (रोमियों 4:25)

"और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है, और तुम अब तक अपने पापों में फँसे हो।.... परन्तु सचमुच मसीह मुर्दों में से जी उठा है, और जो सो गए हैं उनमें वह पहला फल हुआ।" (1 कुरिन्थियों 15:17,20)

"हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जिसने यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा, अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिये नया जन्म दिया।" (1 पतरस 1:3)
"यीशु ने उससे कहा, "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ; जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए तौभी जीएगा।'" (यूहन्ना 11:25)

9. यीशु पर विश्वास करने की सरलता

परमेश्वर के उद्धार का संदेश, जिसे "सुसमाचार" (शुभ समाचार) भी कहा जाता है, इसलिए सरल है क्योंकि हमें इसके लिए खुद को योग्य साबित नहीं करना होता, बल्कि मात्र यीशु पर विश्वास और भरोसा करना होता है।
"परन्तु मैं डरता हूँ कि जैसे साँप ने अपनी चतुराई से हव्वा को बहकाया, वैसे ही तुम्हारे मन उस सीधाई और पवित्रता से जो मसीह के साथ होनी चाहिए, कहीं भ्रष्ट न किए जाएँ।" (2 कुरिन्थियों 11:3)
"उन्होंने उससे कहा, "परमेश्वर के कार्य करने के लिये हम क्या करें?" यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "परमेश्वर का कार्य यह है कि तुम उस पर, जिसे उसने भेजा है, विश्वास करो।'" (यूहन्ना 6:28–29)
"उसकी सब भविष्यद्वक्ता गवाही देते हैं कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी।" (प्रेरितों के काम 10:43)
"चौकस रहो कि कोई तुम्हें उस तत्व-ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा अपना अहेर न बना ले, जो मनुष्यों की परम्पराओं और संसार की आदि शिक्षा के अनुसार तो है, पर मसीह के अनुसार नहीं।" (कुलुस्सियों 2:8)
"तौभी यह जानकर कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं, पर केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहरता है, हम ने आप भी मसीह यीशु पर विश्वास किया कि हम व्यवस्था के कामों से नहीं, पर मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहरें; इसलिये कि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी धर्मी न ठहरेगा।" (गलातियों 2:16)

"हे समस्त पृथ्वी के लोगो, यहोवा का गीत गाओ। प्रतिदिन उसके किए हुए उद्धार का शुभ समाचार सुनाते रहो।" (1 इतिहास 16:23)

कुछ लोग अच्छी ख़बर की सादगी को इस तरह से विकृत करने की कोशिश करते हैं कि उद्धार पाने के लिए कुछ और करना ज़रूरी हो या उद्धार को बनाए रखने के लिए कुछ करना हो।

"परमेश्वर का एक एक वचन ताया हुआ है, वह अपने शरणागतों की ढाल ठहरा है। उसके वचनों में कुछ मत बढ़ा, ऐसा न हो कि वह तुझे डाँटे और तू झूठा ठहरे।" (नीतिवचन 30:5–6)

"तू ने किसके डर से झूठ कहा, और किसका भय मानकर ऐसा किया कि मुझ को स्मरण नहीं रखा न मुझ पर ध्यान दिया? क्या मैं बहुत काल से चुप नहीं रहा? इस कारण तू मेरा भय नहीं मानती। मैं आप तेरे धर्म और कर्मों का वर्णन करूँगा, परन्तु, उन से तुझे कुछ लाभ न होगा। जब तू दोहाई दे, तब जिन मूर्तियों को तू ने जमा किया है वे ही तुझे छुड़ाएँ! वे तो सब की सब वायु से वरन् एक ही फूँक से उड़ जाएँगी। परन्तु जो मेरी शरण लेगा वह देश का अधिकारी होगा, और मेरे पवित्र पर्वत का भी अधिकारी होगा।" (यशायाह 57:11–13)

"इस कारण मैं उनको ऐसा तितर-बितर करूँगा, जैसा भूसा जंगल के पवन से तितर-बितर किया जाता है। यहोवा की यह वाणी है, तेरा हिस्सा और मुझ से ठहराया हुआ तेरा भाग यही है, क्योंकि तू ने मुझे भूलकर झूठ पर भरोसा रखा है। इसलिये मैं भी तेरा आँचल तेरे मुँह तक उठाऊँगा, तब तेरी लाज जानी जाएगी।" (यिर्मयाह 13:24–26)

"मुझे आश्चर्य होता है कि जिसने तुम्हें मसीह के अनुग्रह में बुलाया उससे तुम इतनी जल्दी फिर कर और ही प्रकार के सुसमाचार की ओर झुकने लगे। परन्तु वह दूसरा सुसमाचार है ही नहीं : पर बात यह है कि कितने ऐसे हैं जो तुम्हें घबरा देते, और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं। परन्तु यदि हम, या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हम ने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो शापित हो।" (गलातियों 1:6–8)

प्रतिमाओं की आराधना के पाप में स्वयं की आराधना करना भी शामिल है, जहाँ हम अपने कार्यों को परमेश्वर के कार्यों से अधिक मूल्यवान मानते हैं।

"उनका देश प्रतिमाओं से भरा है; वे अपने हाथों की बनाई हुई वस्तुओं को, जिन्हें उन्होंने अपनी उँगलियों से सँवारा है, दण्डवत् करते हैं।" (यशायाह 2:8)

"उनकी सारी बुराई के कारण मैं उन पर दण्ड की आज्ञा दूँगा; क्योंकि उन्होंने मुझे त्यागकर दूसरे देवताओं के लिये धूप जलाया और अपनी बनाई हुई वस्तुओं को दण्डवत् किया है।" (यिर्मयाह 1:16)

"क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर झूठ बना डाला, और सृष्टि की उपासना और सेवा की, न कि उस सृजनहार की जो सदा धन्य है! आमीन।" (रोमियों 1:25)

"कोई धर्म के साथ नालिश नहीं करता, न कोई सच्चाई से मुक़द्दमा लड़ता है; वे मिथ्या पर भरोसा रखते हैं और झूठी बातें बकते हैं; उसको मानो उत्पात का गर्भ रहता, और वे अनर्थ को जन्म देते हैं।" (यशायाह 59:4)

"जो लोग धोखे की व्यर्थ वस्तुओं पर मन लगाते हैं, वे अपने करुणानिधान को छोड़ देते हैं। परन्तु मैं ऊँचे शब्द से धन्यवाद करके तुझे बलिदान चढ़ाऊँगा; जो मन्नत मैं ने मानी, उसको पूरी करूँगा। उद्धार यहोवा ही से होता है!" (योना 2:8–9)

हमें अपनी प्रशंसा में घमण्ड नहीं करना चाहिए, यह सोचते हुए कि हम योगदान कर सकते हैं, बल्कि अपने "शरीर में आत्मविश्वास" को हटाकर "परमेश्वर पर भरोसा" करना चाहिए।

"जो लोग शारीरिक दिखावा चाहते हैं वे ही तुम्हारा खतना करवाने के लिये दबाव डालते हैं, केवल इसलिये कि वे मसीह के क्रूस के कारण सताए न जाएँ। क्योंकि खतना करानेवाले स्वयं तो व्यवस्था पर नहीं चलते, पर तुम्हारा खतना इसलिये कराना चाहते हैं कि तुम्हारी शारीरिक दशा पर घमण्ड करें। पर ऐसा न हो कि मैं अन्य किसी बात का घमण्ड करूँ, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का, जिसके द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं

संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ। क्योंकि न खतना और न खतनारहित कुछ है, परन्तु नई सृष्टि।" (गलातियों 6:12–15)
"इसलिये यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है : पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई हैं।" (2 कुरिन्थियों 5:17)
"क्योंकि खतनावाले तो हम ही हैं जो परमेश्वर के आत्मा की अगुआई से उपासना करते हैं, और मसीह यीशु पर घमण्ड करते हैं, और शरीर पर भरोसा नहीं रखते।" (फिलिप्पियों 3:3)
"इसलिये अपने अपने हृदय का खतना करो, और आगे को हठीले न रहो।" (व्यवस्थाविवरण 10:16)

परमेश्वर घोड़े की सवारी का प्रयोग आत्म-विश्वास (अहंकार) पर निर्भरता का प्रतीक के रूप में करते हैं, और हमें इसके परिणामों के प्रति चेतावनी देते हैं।

"हाय उन पर जो सहायता पाने के लिये मिस्र को जाते हैं और घोड़ों का आसरा करते हैं; जो रथों पर भरोसा रखते क्योंकि वे बहुत हैं, और सवारों पर क्योंकि वे अति बलवान हैं, पर इस्राएल के पवित्र की ओर दृष्टि नहीं करते और न यहोवा की खोज करते हैं!..... मिस्री लोग ईश्वर नहीं, मनुष्य ही हैं; और उनके घोड़े आत्मा नहीं, मांस ही हैं। जब यहोवा हाथ बढ़ाएगा, तब सहायता करनेवाले और सहायता चाहनेवाले दोनों ठोकर खाकर गिरेंगे, और वे सब के सब एक संग नष्ट हो जाएँगे।" (यशायाह 31:1,3)
"आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं; जो बातें मैं ने तुम से कही हैं वे आत्मा हैं, और जीवन भी हैं।" (यूहन्ना 6:63)
"तब उसने मुझे उत्तर देकर कहा, “जरुब्बाबेल के लिये यहोवा का यह वचन है : न तो बल से, और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा होगा, मुझ सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।" (जकर्याह 4:6)
"बच निकलने के लिये घोड़ा व्यर्थ है, वह अपने बड़े बल के द्वारा किसी को नहीं बचा सकता है। देखो, यहोवा की दृष्टि उसके डरवैयों पर और उन पर जो उसकी करुणा की आशा रखते हैं, बनी रहती है, कि वह उनके प्राण

को मृत्यु से बचाए, और अकाल के समय उनको जीवित रखे।" (भजन संहिता 33:17–19)

"जब कोई भटक जाता है तो क्या वह लौट नहीं आता? फिर क्या कारण है कि ये यरूशलेमी सदा दूर ही दूर भटकते जाते हैं? ये छल नहीं छोड़ते, और फिर लौटने से इन्कार करते हैं। मैं ने ध्यान देकर सुना, परन्तु ये ठीक नहीं बोलते; इनमें से किसी ने अपनी बुराई से पछताकर नहीं कहा, 'हाय! मैं ने यह क्या किया है?' जैसा घोड़ा लड़ाई में वेग से दौड़ता है, वैसे ही इनमें से हर एक जन अपनी ही दौड़ में दौड़ता है।" (यिर्मयाह 8:5–6)

"न तो वह घोड़े के बल को चाहता है, और न पुरुष के पैरों से प्रसन्न होता है; यहोवा अपने डरवैयों ही से प्रसन्न होता है, अर्थात् उन से जो उसकी करुणा की आशा लगाए रहते हैं।" (भजन संहिता 147:10–11)

"हे इस्राएल, अपने परमेश्वर यहोवा के पास लौट आ, क्योंकि तू ने अपने अधर्म के कारण ठोकर खाई है। बातें सीखकर और यहोवा की ओर लौटकर, उससे कह, "सब अधर्म दूर कर; अनुग्रह से हम को ग्रहण कर; तब हम धन्यवाद रूपी बलि चढ़ाएँगे। अश्शूर हमारा उद्धार न करेगा, हम घोड़ों पर सवार न होंगे; और न हम फिर अपनी बनाई हुई वस्तुओं से कहेंगे, 'तुम हमारे ईश्वर हो;' क्योंकि अनाथ पर तू ही दया करता है।'" (होशे 14:1–3)

"तब मूसा और इस्राएलियों ने यहोवा के लिये यह गीत गाया। उन्होंने कहा, "मैं यहोवा का गीत गाऊँगा, क्योंकि वह महाप्रतापी ठहरा है; घोड़ों समेत सवारों को उसने समुद्र में पटक दिया है। यहोवा मेरा बल और भजन का विषय है, और वही मेरा उद्धार भी ठहरा है; मेरा परमेश्वर वही है, मैं उसी की स्तुति करूँगा, (मैं उसके लिये निवास-स्थान बनाऊँगा), मेरे पूर्वजों का परमेश्वर वही है, मैं उसको सराहूँगा।" (निर्गमन 15:1–2)

"किसी को रथों का, और किसी को घोड़ों का भरोसा है, परन्तु हम तो अपने परमेश्वर यहोवा ही का नाम लेंगे।" (भजन संहिता 20:7)

हम में मूल्य है क्योंकि परमेश्वर ने हमें बनाया और हमसे प्रेम किया, परन्तु परमेश्वर घमंड और आत्म-विश्वास से घृणा करते हैं। हमारा विश्वास परमेश्वर में होना चाहिए।

"यहोवा का भय मानना बुराई से बैर रखना है। घमण्ड, अहंकार और बुरी चाल से, और उलट फेर की बात से भी मैं बैर रखती हूँ।" (नीतिवचन 8:13)
"क्योंकि भीतर से, अर्थात् मनुष्य के मन से, बुरे बुरे विचार, व्यभिचार, चोरी, हत्या, परस्त्रीगमन, लोभ, दुष्टता, छल, लुचपन, कुदृष्टि, निन्दा, अभिमान, और मूर्खता निकलती हैं। ये सब बुरी बातें भीतर ही से निकलती हैं और मनुष्य को अशुद्ध करती हैं।"" (मरकुस 7:21–23)
"मनुष्य को गर्व के कारण नीचा देखना पड़ता है, परन्तु नम्र आत्मावाला महिमा का अधिकारी होता है।" (नीतिवचन 29:23)
"विनाश से पहले गर्व, और ठोकर खाने से पहले घमण्ड आता है।" (नीतिवचन 16:18)
"ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक जान पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।" (नीतिवचन 14:12)
"देख, उसका मन फूला हुआ है, उसका मन सीधा नहीं है; परन्तु धर्मी अपने विश्वास के द्वारा जीवित रहेगा।" (हबक्कूक 2:4)
हे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर, हे पृथ्वी के सब दूर दूर देशों के और दूर के समुद्र पर के रहनेवालों के आधार, तू धर्म से किए हुए भयानक कामों के द्वारा हमें मुँह माँगा वर देगा।" (भजन संहिता 65:5)

यीशु ने एक दृष्टांत में दो लोगों के बारे में सिखाया: एक जो अपने कार्यों को देखता था और एक जो परमेश्वर की दया को देखता था।

"उसने उनसे जो अपने ऊपर भरोसा रखते थे, कि हम धर्मी हैं, और दूसरों को तुच्छ जानते थे, यह दृष्टान्त कहा : “दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्थना करने के लिये गए; एक फरीसी था और दूसरा चुंगी लेनेवाला। फरीसी खड़ा होकर अपने मन में यों प्रार्थना करने लगा, ‘हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि मैं दूसरे मनुष्यों के समान अन्धेर करनेवाला, अन्यायी और व्यभिचारी नहीं, और न इस चुंगी लेनेवाले के समान हूँ। मैं सप्ताह में दो बार उपवास रखता हूँ; मैं अपनी सब कमाई का दसवाँ अंश भी देता हूँ।’“परन्तु चुंगी लेनेवाले ने दूर खड़े होकर, स्वर्ग की ओर आँखें उठाना भी न चाहा, वरन् अपनी छाती पीट-पीटकर कहा, ‘हे परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कर!’ मैं तुम से कहता हूँ कि वह दूसरा नहीं, परन्तु यही मनुष्य धर्मी ठहराया जाकर

अपने घर गया; क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।'" (लूका 18:9–14)

हमें परमेश्वर पिता की इच्छा को पूरा करना चाहिए, यीशु के पूरे हुए कार्य पर भरोसा करते हुए, न कि स्वयं के "महान कार्यों" पर निर्भर रहते हुए।
"जो मुझ से, 'हे प्रभु! हे प्रभु!' कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है। उस दिन बहुत से लोग मुझ से कहेंगे, 'हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हम ने तेरे नाम से भविष्यद्वाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत से आश्चर्यकर्म नहीं किए?' तब मैं उनसे खुलकर कह दूँगा, 'मैं ने तुम को कभी नहीं जाना। हे कुकर्म करनेवालो, मेरे पास से चले जाओ।'" (मत्ती 7:21–23)

10. <u>स्वर्ग और नरक</u>

नर्क (अभी हेडीज़, बाद में अग्नि की झील) वह स्थान है जहाँ शैतान (इब्लीस) और वे सभी लोग जो परमेश्वर के मार्ग को अस्वीकार करते हैं, अंत में जाएंगे।
"सचेत हो, और जागते रहो; क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए।" (1 पतरस 5:8)
"उन का भरमानेवाला शैतान आग और गन्धक की उस झील में, जिसमें वह पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता भी होगा, डाल दिया जाएगा; और वे रात दिन युगानुयुग पीड़ा में तड़पते रहेंगे।" (प्रकाशितवाक्य 20:10)
"ऐसा हुआ कि वह कंगाल मर गया, और स्वर्गदूतों ने उसे लेकर अब्राहम की गोद में पहुँचाया। वह धनवान भी मरा और गाड़ा गया, और अधोलोक में उसने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आँखें उठाईं, और दूर से अब्राहम की गोद में लाजर को देखा। तब उसने पुकार कर कहा, 'हे पिता अब्राहम, मुझ पर दया करके लाजर को भेज दे, ताकि वह अपनी उँगली का सिरा पानी में

भिगोकर मेरी जीभ को ठंडी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूँ।'" (लूका 16:22–24)

"उनकी पीड़ा का धुआँ युगानुयुग उठता रहेगा, और जो उस पशु और उसकी मूर्ति की पूजा करते हैं, और जो उसके नाम की छाप लेते हैं, उनको रात दिन चैन न मिलेगा।" (प्रकाशितवाक्य 14:11)

पर यदि हम परमेश्वर का उद्धार स्वीकार करते हैं, तो हम बचा लिए जाएँगे और स्वर्ग (नए पृथ्वी) में उसके साथ अनंत शांति और आनंद में रहेंगे।

"हे यहोवा, मैं तेरा शरणागत हूँ; मेरी आशा कभी टूटने न पाए! तू तो धर्मी है, मुझे छुड़ा और मेरा उद्धार कर; मेरी ओर कान लगा, और मेरा उद्धार कर!" (भजन संहिता 71:1–2)

"वह मृत्यु का सदा के लिये नाश करेगा, और प्रभु यहोवा सभों के मुख पर से आँसू पोंछ डालेगा, और अपनी प्रजा की नामधराई सारी पृथ्वी पर से दूर करेगा; क्योंकि यहोवा ने ऐसा ही कहा है।" (यशायाह 25:8)

"वह उनकी आँखों से सब आँसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहली बातें जाती रहीं।" (प्रकाशितवाक्य 21:4)

"फिर रात न होगी, और उन्हें दीपक और सूर्य के उजियाले की अवश्यकता न होगी, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें उजियाला देगा, और वे युगानुयुग राज्य करेंगे।" (प्रकाशितवाक्य 22:5)

"क्योंकि देखो, मैं नया आकाश और नई पृथ्वी उत्पन्न करता हूँ; और पहली बातें स्मरण न रहेंगी और सोच विचार में भी न आएँगी। इसलिये जो मैं उत्पन्न करने पर हूँ, उसके कारण तुम हर्षित हो और सदा सर्वदा मगन रहो; क्योंकि देखो, मैं यरूशलेम को मगन और उसकी प्रजा को आनन्दित बनाऊँगा।" (यशायाह 65:17–18)

"मेरे निवास का तम्बू उनके ऊपर तना रहेगा; और मैं उनका परमेश्वर हूँगा, और वे मेरी प्रजा होंगे।" (यहेजकेल 37:27)

"फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा।... फिर मैं ने सिंहासन

में से किसी को ऊँचे शब्द से यह कहते हुए सुना, "देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है। वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा और उनका परमेश्वर होगा।'" (प्रकाशितवाक्य 21:1,3)

"पर उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक नए आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिनमें धार्मिकता वास करेगी।" (2 पतरस 3:13)

"प्रेम के चुम्बन से एक दूसरे को नमस्कार करो। तुम सब को, जो मसीह में हो, शान्ति मिलती रहे।" (1 पतरस 5:14)

"अब प्रभु जो शान्ति का सोता है आप ही तुम्हें सदा और हर प्रकार से शान्ति दे। प्रभु तुम सब के साथ रहे।" (2 थिस्सलुनीकियों 3:16)

11. <u>बलिदान और व्यवस्था</u>

परमेश्वर बलिदानों की इच्छा नहीं रखते। बलिदानों का उद्देश्य पाप की गंभीरता और आने वाले उद्धारकर्ता की आवश्यकता की याद दिलाना था।

"मेलबलि और अन्नबलि से तू प्रसन्न नहीं होता तू ने मेरे कान खोदकर खोले हैं। होमबलि और पापबलि तू ने नहीं चाहा।" (भजन संहिता 40:6)

"यहोवा यह कहता है, "तुम्हारे बहुत से मेलबलि मेरे किस काम के हैं? मैं तो मेढ़ों के होमबलियों से और पाले हुए पशुओं की चर्बी से अघा गया हूँ; मैं बछड़ों या भेड़ के बच्चों या बकरों के लहू से प्रसन्न नहीं होता।..... व्यर्थ अन्नबलि फिर मत लाओ; धूप से मुझे घृणा है। नये चाँद और विश्रामदिन का मनाना, और सभाओं का प्रचार करना, यह मुझे बुरा लगता है। महासभा के साथ ही साथ अनर्थ काम करना मुझ से सहा नहीं जाता।" (यशायाह 1:11,13)

"क्योंकि मैं बलिदान से नहीं, स्थिर प्रेम ही से प्रसन्न होता हूँ, और होमबलियों से अधिक यह चाहता हूँ कि लोग परमेश्वर का ज्ञान रखें।" (होशे 6:6)

"जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर, हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता; न किसी वस्तु की आवश्यकता के कारण मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है,

क्योंकि वह स्वयं ही सब को जीवन और श्वास और सब कुछ देता है।" (प्रेरितों के काम 17:24–25)

पवित्र और निर्दोष बलिदान की आवश्यकता इस बात को दर्शाने के लिए थी कि हमें पापरहित उद्धारकर्ता, यीशु मसीह, की आवश्यकता है, जो एकमात्र स्वीकृत बलिदान है।

"जिसमें कोई भी दोष हो उसे न चढ़ाना; क्योंकि वह तुम्हारे निमित्त ग्रहणयोग्य न ठहरेगा। और जो कोई बैलों या भेड़-बकरियों में से विशेष वस्तु संकल्प करने के लिये या स्वेच्छाबलि के लिये यहोवा को मेलबलि चढ़ाए, तो ग्रहण होने के लिये अवश्य है कि वह निर्दोष हो, उसमें कोई भी दोष न हो।" (लैव्यव्यवस्था 22:20–21)

"तुम्हारा मेम्ना निर्दोष और एक वर्ष का नर हो, और उसे चाहे भेड़ों में से लेना चाहे बकरियों में से।" (निर्गमन 12:5)

"क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारा निकम्मा चालचलन जो बापदादों से चला आता है, उससे तुम्हारा छुटकारा चाँदी-सोने अर्थात् नाशवान् वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ; पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने, अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा हुआ। " (1 पतरस 1:18–19)

"दूसरे दिन उसने यीशु को अपनी ओर आते देखकर कहा, “देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है।'" (यूहन्ना 1:29)

"तुम जानते हो कि वह इसलिये प्रगट हुआ कि पापों को हर ले जाए; और उसके स्वभाव में पाप नहीं।" (1 यूहन्ना 3:5)

"क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दु:खी न हो सके; वरन् वह सब बातों में हमारे समान परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला। इसलिये आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बाँधकर चलें कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएँ जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे।" (इब्रानियों 4:15–16)

परमेश्वर बलिदान के बजाय पश्चाताप (अपने पाप को स्वीकार करना और यीशु पर विश्वास रखना) चाहता है, न कि ऐसे कार्य जिन्हें हम अच्छा समझते हैं।

"मैं क्या लेकर यहोवा के सम्मुख आऊँ, और ऊपर रहनेवाले परमेश्वर के सामने झुकूँ? क्या मैं होमबलि के लिये एक एक वर्ष के बछड़े लेकर उसके सम्मुख आऊँ? क्या यहोवा हज़ारों मेढ़ों से, या तेल की लाखों नदियों से प्रसन्न होगा? क्या मैं अपने अपराध के प्रायश्चित्त में अपने पहिलौठे को या अपने पाप के बदले में अपने जन्माए हुए किसी को दूँ?" हे मनुष्य, वह तुझे बता चुका है कि अच्छा क्या है; और यहोवा तुझ से इसे छोड़ और क्या चाहता है, कि तू न्याय से काम करे, और कृपा से प्रीति रखे, और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चले? (मीका 6:6–8)

"क्योंकि तू मेलबलि से प्रसन्न नहीं होता, नहीं तो मैं देता; होमबलि से भी तू प्रसन्न नहीं होता। टूटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है; हे परमेश्वर, तू टूटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता।" (भजन संहिता 51:16–17)

"धर्म के बलिदान चढ़ाओ, और यहोवा पर भरोसा रखो।" (भजन संहिता 4:5)

"इसलिये आओ मसीह की शिक्षा की आरम्भ की बातों को छोड़कर हम सिद्धता की ओर आगे बढ़ते जाएँ, और मरे हुए कामों से मन फिराने, और परमेश्वर पर विश्वास करने।" (इब्रानियों 6:1)

"वरन् यहूदियों और यूनानियों के सामने गवाही देता रहा कि परमेश्वर की ओर मन फिराना और हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करना चाहिए।" (प्रेरितों के काम 20:21)

पुराने नियम की व्यवस्था उद्धार का माध्यम नहीं थी, बल्कि यह इस उद्देश्य से दी गई थी कि हमें उद्धारकर्ता की आवश्यकता का बोध हो।

"आज्ञा तो दीपक है और शिक्षा ज्योति, और सिखानेवाले की डांट जीवन का मार्ग है।" (नीतिवचन 6:23)

"हम जानते हैं कि व्यवस्था जो कुछ कहती है उन्हीं से कहती है, जो व्यवस्था के अधीन हैं; इसलिये कि हर एक मुँह बंद किया जाए और सारा संसार परमेश्वर के दण्ड के योग्य ठहरे; क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके सामने धर्मी नहीं ठहरेगा, इसलिये कि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहिचान होती है।" (रोमियों 3:19–20)

"हम क्यों चुपचाप बैठे हैं? आओ, हम चलकर गढ़वाले नगरों में इकट्ठे नष्ट हो जाएँ; क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा हम को नष्ट करना चाहता है, और हमें विष पीने को दिया है; क्योंकि हम ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है।" (यिर्मयाह 8:14)

"यहूदा ने कहा, “हम लोग अपने प्रभु से क्या कहें? हम क्या कहकर अपने को निर्दोष ठहराएँ? परमेश्वर ने तेरे दासों के अधर्म को पकड़ लिया है। हम, और जिसके पास कटोरा निकला वह भी, हम सब के सब अपने प्रभु के दास ही हैं।" (उत्पत्ति 44:16)

"सचमुच मैं चुपचाप होकर परमेश्वर की ओर मन लगाए हूँ, मेरा उद्धार उसी से होता है।" (भजन संहिता 62:1)

"जब सब इस्राएली तेरे परमेश्वर यहोवा के उस स्थान पर जिसे वह चुन लेगा आकर इकट्ठे हों, तब यह व्यवस्था सब इस्राएलियों को पढ़कर सुनाना। क्या पुरुष, क्या स्त्री, क्या बालक, क्या तुम्हारे फाटकों के भीतर के परदेशी, सब लोगों को इकट्ठा करना कि वे सुनकर सीखें, और तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का भय मानकर, इस व्यवस्था के सारे वचनों के पालन करने में चौकसी करें।" (व्यवस्थाविवरण 31:11–12)

"और यहोवा ने हमें ये सब विधियाँ पालन करने की आज्ञा दी, इसलिये कि हम अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानें, और इस रीति सदैव हमारा भला हो, और वह हम को जीवित रखे, जैसा कि आज के दिन है।" (व्यवस्थाविवरण 6:24)

"क्योंकि व्यवस्था, जिसमें आनेवाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब है पर उनका असली स्वरूप नहीं, इसलिये उन एक ही प्रकार के बलिदानों के द्वारा जो प्रतिवर्ष अचूक चढ़ाए जाते हैं, पास आनेवालों को कदापि सिद्ध नहीं कर सकती। .... परन्तु उनके द्वारा प्रति वर्ष पापों का स्मरण हुआ करता है। क्योंकि यह अनहोना है कि बैलों और बकरों का लहू पापों को दूर करे।" (इब्रानियों 10:1,3–4)

"इसलिये व्यवस्था मसीह तक पहुँचाने के लिये हमारी शिक्षक हुई है कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें।" (गलातियों 3:24)

"इसलिये, हे भाइयो, तुम जान लो कि इसी के द्वारा पापों की क्षमा का समाचार तुम्हें दिया जाता है; और जिन बातों में तुम मूसा की व्यवस्था के द्वारा निर्दोष नहीं ठहर सकते थे, उन्हीं सब में हर एक विश्वास करनेवाला उसके द्वारा निर्दोष ठहरता है।" (प्रेरितों के काम 13:38–39)

विश्राम के नियम का उद्देश्य यह सिखाना था कि हमें अपने कामों से विश्राम लेना चाहिए और परमेश्वर के काम पर भरोसा करना चाहिए।

"तू इस्राएलियों से यह भी कहना, 'निश्चय तुम मेरे विश्रामदिनों को मानना, क्योंकि तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में मेरे और तुम लोगों के बीच यह एक चिह्न ठहरा है, जिससे तुम यह बात जान रखो कि यहोवा हमारा पवित्र करनेहारा है। इस कारण तुम विश्रामदिन को मानना, क्योंकि वह तुम्हारे लिये पवित्र ठहरा है; जो उसको अपवित्र करे वह निश्चय मार डाला जाए : जो कोई उस दिन में कुछ कामकाज करे वह प्राणी अपने लोगों के बीच से नष्ट किया जाए।" (निर्गमन 31:13–14)

"इसलिये खाने-पीने या पर्व या नए चाँद, या सब्त के विषय में तुम्हारा कोई फैसला न करे। क्योंकि ये सब आनेवाली बातों की छाया हैं, पर मूल वस्तुएँ मसीह की हैं।" (कुलुस्सियों 2:16–17)

"उसी समय यीशु ने कहा, "हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तू ने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा, और बालकों पर प्रगट किया है।..... "हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।'" (मत्ती 11:25,28)

पुराने नियम के लोग अपने कार्यों के द्वारा नहीं, बल्कि परमेश्वर के अनुग्रह और विश्वास के द्वारा, आने वाले उद्धार पर भरोसा रखकर बचाए गए।

""हे कठोर मनवालो, तुम जो धर्म से दूर हो, कान लगाकर मेरी सुनो। मैं अपनी धार्मिकता को समीप ले आने पर हूँ वह दूर नहीं है, और मेरे उद्धार करने में विलम्ब न होगा; मैं सिय्योन का उद्धार करूँगा और इस्राएल को महिमा दूँगा।" (यशायाह 46:12–13)

"यहोवा यों कहता है, “न्याय का पालन करो, और धर्म के काम करो; क्योंकि मैं शीघ्र तुम्हारा उद्धार करूँगा, और मेरा धर्मी होना प्रगट होगा।'" (यशायाह 56:1)

"परन्तु मैं यहोवा की ओर ताकता रहूँगा, मैं अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर की बाट जोहता रहूँगा; मेरा परमेश्वर मेरी सुनेगा।" (मीका 7:7)

"मुझे तो निश्चय है कि मेरा छुड़ानेवाला जीवित है, और वह अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा।" (अय्यूब 19:25)

"परन्तु मैंने तो तेरी करुणा पर भरोसा रखा है; मेरा हृदय तेरे उद्धार से मगन होगा।" (भजन संहिता 13:5)

"तब हन्ना ने प्रार्थना करके कहा, “मेरा मन यहोवा के कारण मगन है; मेरा सींग यहोवा के कारण ऊँचा हुआ है। मेरा मुँह मेरे शत्रुओं के विरुद्ध खुल गया, क्योंकि मैं तेरे किए हुए उद्धार से आनन्दित हूँ। “यहोवा के तुल्य कोई पवित्र नहीं, क्योंकि तुझ को छोड़ और कोई है ही नहीं; और हमारे परमेश्वर के समान कोई चट्टान नहीं है।'" (1 शमूएल 2:1–2)

"उस समय यह कहा जाएगा, “देखो, हमारा परमेश्वर यही है, हम इसी की बाट जोहते आए हैं, कि वह हमारा उद्धार करे। यहोवा यही है; हम उसकी बाट जोहते आए हैं। हम उससे उद्धार पाकर मगन और आनन्दित होंगे।'" (यशायाह 25:9)

कई यहूदी यीशु के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे, जैसे शिमोन और हन्ना, जिन्होंने बालक यीशु को देखा।

"यरूशलेम में शमौन नामक एक मनुष्य था, और वह मनुष्य धर्मी और भक्त था; और इस्राएल की शान्ति की बाट जोह रहा था, और पवित्र आत्मा उस पर था।..... तो उसने उसे अपनी गोद में लिया और परमेश्वर का धन्यवाद करके कहा : “हे स्वामी, अब तू अपने दास को अपने वचन के अनुसार शान्ति से विदा करता है, क्योंकि मेरी आँखों ने तेरे उद्धार को देख लिया है।'" (लूका 2:25,28–30)

"आशेर के गोत्र में से हन्नाह नामक फनूएल की बेटी एक भविष्यद्वक्तिन थी। वह बहुत बूढ़ी थी, और विवाह होने के बाद सात वर्ष अपने पति के साथ रह पाई थी।.... और वह उस घड़ी वहाँ आकर प्रभु का धन्यवाद करने

लगी, और उन सभों से, जो यरूशलेम के छुटकारे की बाट जोहते थे, उस बालक के विषय में बातें करने लगी।" (लूका 2:36,38)

12. भविष्यवाणियाँ और पूर्वाभास

पुराने नियम की भविष्यवाणियों ने यह दिखाया कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है (इम्मानुएल का अर्थ है "परमेश्वर हमारे साथ") और यह भी बताया कि वह हमारे पापों को सहेंगे।

"क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके काँधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा।" (यशायाह 9:6)

"इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिह्न देगा। सुनो, एक कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी।" (यशायाह 7:14)

"कौन स्वर्ग में चढ़कर फिर उतर आया? किसने वायु को अपनी मुट्ठी में बटोर रखा है? किसने महासागर को अपने वस्त्र में बाँध लिया है? किसने पृथ्वी की सीमाओं को ठहराया है? उसका नाम क्या है? और उसके पुत्र का नाम क्या है? यदि तू जानता हो तो बता!" (नीतिवचन 30:4)

"पुत्र को चूमो, ऐसा न हो कि वह क्रोध करे, और तुम मार्ग ही में नष्ट हो जाओ, क्योंकि क्षण भर में उसका क्रोध भड़कने को है। धन्य हैं वे जिनका भरोसा उस पर है।" (भजन संहिता 2:12)

"परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएँ। हम तो सब के सब भेड़ों के समान भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।" (यशायाह 53:5–6)

"वह अपने प्राणों का दु:ख उठाकर उसे देखेगा और तृप्त होगा; अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्मी दास बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा; और उनके अधर्म के कामों का बोझ आप उठा लेगा।" (यशायाह 53:11)

पुराने नियम में यीशु के विषय में की गई कुछ भविष्यवाणियाँ और उनके कई सौ वर्षों बाद यीशु मसीह में पूरी हुईं।

"मैं दाऊद के घराने और यरूशलेम के निवासियों पर अपना अनुग्रह करनेवाली और प्रार्थना सिखानेवाली आत्मा उण्डेलूँगा, तब वे मुझे ताकेंगे अर्थात् जिसे उन्होंने बेधा है, और उसके लिये ऐसे रोएँगे जैसे एकलौते पुत्र के लिये रोते-पीटते हैं, और ऐसा भारी शोक करेंगे, जैसा पहिलौठे के लिये करते हैं।" (जकर्याह 12:10)

"परन्तु सैनिकों में से एक ने बरछे से उसका पंजर बेधा, और उसमें से तुरन्त लहू और पानी निकला।" (यूहन्ना 19:34)

"हे बैतलहम एप्राता, यदि तू ऐसा छोटा है कि यहूदा के हज़ारों में गिना नहीं जाता, तौभी तुझ में से मेरे लिये एक पुरुष निकलेगा, जो इस्राएलियों में प्रभुता करनेवाला होगा; और उसका निकलना प्राचीनकाल से, वरन् अनादि काल से होता आया है।" (मीका 5:2)

"हेरोदेस राजा के दिनों में जब यहूदिया के बैतलहम में यीशु का जन्म हुआ, तो पूर्व से कई ज्योतिषी यरूशलेम में आकर पूछने लगे।" (मत्ती 2:1)

"हे सिय्योन बहुत ही मगन हो! हे यरूशलेम, जयजयकार कर! क्योंकि तेरा राजा तेरे पास आएगा; वह धर्मी और उद्धार पाया हुआ है, वह दीन है, और गदहे पर वरन् गदही के बच्चे पर चढ़ा हुआ आएगा।" (जकर्याह 9:9)

"वे उसको यीशु के पास ले आए, और अपने कपड़े उस बच्चे पर डालकर यीशु को उस पर बैठा दिया। जब वह जा रहा था, तो वे अपने कपड़े मार्ग में बिछाते जाते थे।" (लूका 19:35–36)

"मैंने मारनेवालों को अपनी पीठ और गलमोछ नोचनेवालों की ओर अपने गाल किए; अपमानित होने और उनके थूकने से मैं ने मुँह न छिपाया।" (यशायाह 50:6)

"तब उन्होंने उसके मुँह पर थूका और उसे घूँसे मारे।" (मत्ती 26:67)

कई वास्तविक घटनाएँ यीशु की छाया के रूप में दिखाई देती हैं। नीचे कुछ घटनाएँ यूसुफ के जीवन की हैं, और उन बातों की पूर्ति प्रभु यीशु मसीह में होती है।

"याक़ूब के वंश का वृत्तान्त यह है : यूसुफ सत्रह वर्ष का होकर अपने भाइयों के संग भेड़-बकरियों को चराता था; और वह लड़का अपने पिता की पत्नी बिल्हा और जिल्पा के पुत्रों के संग रहा करता था; और उनकी बुराइयों का समाचार अपने पिता के पास पहुँचाया करता था। .... परन्तु जब उसके भाइयों ने देखा कि हमारा पिता हम सब भाइयों से अधिक उसी से प्रीति रखता है, तब वे उससे बैर करने लगे और उसके साथ ठीक से बात भी नहीं करते थे।" (उत्पत्ति 37:2,4)

"संसार तुम से बैर नहीं कर सकता, परन्तु वह मुझ से बैर करता है क्योंकि मैं उसके विरोध में यह गवाही देता हूँ कि उसके काम बुरे हैं।" (यूहन्ना 7:7)

"ज्योंही उन्होंने उसे दूर से आते देखा और... उसे मार डालने का षड्यंत्र रचा।" (उत्पत्ति 37:18)

"जब भोर हुई तो सब प्रधान याजकों और लोगों के पुरनियों ने यीशु को मार डालने की सम्मति की।" (मत्ती 27:1)

"इसलिये परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे आगे इसी लिये भेजा कि तुम पृथ्वी पर जीवित रहो, और तुम्हारे प्राणों के बचने से तुम्हारा वंश बढ़े।" (उत्पत्ति 45:7)

"हम ने देख भी लिया और गवाही देते हैं कि पिता ने पुत्र को जगत का उद्धारकर्ता करके भेजा है।" (1 यूहन्ना 4:14)

"जब मिस्र और कनान देश का रुपया समाप्त हो गया, तब सब मिस्री यूसुफ के पास आ आकर कहने लगे, “हम को भोजनवस्तु दे; क्या हम रुपये के न रहने से तेरे रहते हुए मर जाएँ?" (उत्पत्ति 47:15)

"यीशु ने उनसे कहा, 'मैं जीवन की रोटी हूँ।' " (यूहन्ना 6:35)

13. आदम और हव्वा

आदम और हव्वा ने अपने पाप की शर्म (नग्नता) को ढाँपने के लिए अपने कार्यों (उनके कर्मों) का सहारा लिया। लेकिन परमेश्वर ने दिखाया कि केवल उसके द्वारा किया गया उद्धार का कार्य ही स्वीकार्य है।

"तब उन दोनों की आँखें खुल गईं, और उनको मालूम हुआ कि वे नग्न हैं; इसलिए उन्होंने अंजीर के पत्ते जोड़ जोड़ कर लंगोट बना लिये।" (उत्पत्ति 3:7)

"और यहोवा परमेश्वर ने आदम और उसकी पत्नी के लिये चमड़े के अँगरखे बनाकर उनको पहिना दिए।" (उत्पत्ति 3:21)

हमारे पाप को हमारे कार्यों या "अच्छे कामों" के माध्यम से ढाँपने के प्रयास की व्यर्थता को दर्शाने वाले समान वचन:

"उनके जाले कपड़े का काम न देंगे, न वे अपने कामों से अपने को ढाँप सकेंगे। क्योंकि उनके काम अनर्थ ही के होते हैं, और उनके हाथों से उपद्रव का काम होता है।" (यशायाह 59:6)

"जो अपने अपराध छिपा रखता है, उसका कार्य सफल नहीं होता, परन्तु जो उनको मान लेता और छोड़ भी देता है, उस पर दया की जायेगी।" (नीतिवचन 28:13)

यदि हम अपने पाप को स्वीकार कर, अपने मैले वस्त्रों को उतार फेंक दें, और यीशु मसीह के पास दौड़ें, तो हमें उसकी धार्मिकता का वस्त्र प्राप्त होगा।

"हम तो सब के सब अशुद्ध मनुष्य के से हैं, और हमारे धर्म के काम सब के सब मैले चिथड़ों के समान हैं। हम सब के सब पत्ते के समान मुर्झा जाते हैं, और हमारे अधर्म के कामों ने हमें वायु के समान उड़ा दिया है।" (यशायाह 64:6)

"वह अपना कपड़ा फेंककर शीघ्र उठा, और यीशु के पास आया।" (मरकुस 10:50)

"मैं यहोवा के कारण अति आनन्दित होऊँगा, मेरा प्राण परमेश्वर के कारण मगन रहेगा; क्योंकि उसने मुझे उद्धार के वस्त्र पहिनाए, और धर्म की

चद्दर ऐसे ओढ़ा दी है जैसे दूल्हा फूलों की माला से अपने आपको सजाता और दुल्हिन अपने गहनों से अपना सिंगार करती है।" (यशायाह 61:10)
"जितने हथियार तेरी हानि के लिये बनाए जाएँ, उन में से कोई सफल न होगा, और जितने लोग मुद्दई होकर तुझ पर नालिश करें उन सभों से तू जीत जाएगा। यहोवा के दासों का यही भाग होगा, और वे मेरे ही कारण धर्मी ठहरेंगे, यहोवा की यही वाणी है।" (यशायाह 54:17)

मैले वस्त्र परमेश्वर की उपस्थिति में फटकर पाप को प्रकट कर देंगे। केवल प्रभु यीशु मसीह की धार्मिकता का वस्त्र ही स्थायी है।
"तेरा धर्म सदा का धर्म है, और तेरी व्यवस्था सत्य है।" (भजन संहिता 119:142)
"क्योंकि घुन उन्हें कपड़े के समान और कीड़ा उन्हें ऊन के समान खाएगा; परन्तु मेरा धर्म अनन्तकाल तक, और मेरा उद्धार पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहेगा।" (यशायाह 51:8)
"देख, मैं चोर के समान आता हूँ; धन्य वह है जो जागता रहता है, और अपने वस्त्र की चौकसी करता है कि नंगा न फिरे, और लोग उसका नंगापन न देखें।" (प्रकाशितवाक्य 16:15)

यदि हम अपने कार्यों पर ध्यान दें, तो हम सोच सकते हैं कि हम उद्धार पा चुके हैं, लेकिन अंततः पता चलेगा कि हमारे पास यीशु की धार्मिकता का वस्त्र नहीं है।
"जब राजा अतिथियों को देखने भीतर आया, तो उसने वहाँ एक मनुष्य को देखा, जो विवाह का वस्त्र नहीं पहिने था। उसने उससे पूछा, 'हे मित्र; तू विवाह का वस्त्र पहिने बिना यहाँ क्यों आ गया?' उसका मुँह बंद हो गया। तब राजा ने सेवकों से कहा, 'इसके हाथ-पाँव बाँधकर उसे बाहर अन्धियारे में डाल दो, वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।'" (मत्ती 22:11–13)

14. कैन और हाबिल

कैन ने अपने कार्यों के फल का बलिदान चढ़ाया और वह अस्वीकार कर दिया गया। हाबिल ने भेड़ (जो यीशु के बलिदान पर विश्वास का प्रतीक है) चढ़ाई और उसे स्वीकार कर लिया गया।

"फिर उसने उसके भाई हाबिल को भी जन्म दिया। हाबिल भेड़-बकरियों का चरवाहा बन गया, परन्तु कैन भूमि पर खेती करने वाला किसान बना। कुछ दिनों के पश्चात् कैन यहोवा के पास भूमि की उपज में से कुछ भेंट ले आया, और हाबिल भी अपनी भेड़-बकरियों के कई एक पहिलौठे बच्चे भेंट चढ़ाने ले आया और उनकी चर्बी भेंट चढ़ाई; तब यहोवा ने हाबिल और उसकी भेंट को तो ग्रहण किया, परन्तु कैन और उसकी भेंट को उसने ग्रहण न किया। तब कैन अति क्रोधित हुआ, और उसके मुँह पर उदासी छा गई। तब यहोवा ने कैन से कहा, "तू क्यों क्रोधित हुआ? और तेरे मुँह पर उदासी क्यों छा गई है? यदि तू भला करे, तो क्या तेरी भेंट ग्रहण न की जाएगी? और यदि तू भला न करे, तो पाप द्वार पर छिपा रहता है; और उसकी लालसा तेरी ओर होगी, और तुझे उस पर प्रभुता करनी है।'" (उत्पत्ति 4:2–7)

कैन ने अपने कार्यों पर भरोसा किया (अपना मार्ग चुना), भूमि जोती, और अपने कार्यों के फल (बलिदान) को चढ़ाया।

"जब तू परमेश्वर के भवन में जाए, तब सावधानी से चलना; सुनने के लिये समीप जाना मूर्खों के बलिदान चढ़ाने से उत्तम है; क्योंकि वे नहीं जानते कि बुरा करते हैं।" (सभोपदेशक 5:1)

"तुम ने दुष्टता के लिये हल जोता और अन्याय का खेत काटा है; और तुम ने धोखे का फल खाया है। यह इसलिये हुआ क्योंकि तुम ने अपने कुव्यवहार पर, और अपने बहुत से वीरों पर भरोसा रखा था।" (होशे 10:13)

"ऐसा भी मार्ग है, जो मनुष्य को सीधा जान पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।" (नीतिवचन 16:25)

"मैं एक हठीली जाति के लोगों की ओर दिन भर हाथ फैलाए रहा, जो अपनी युक्तियों के अनुसार बुरे मार्गों में चलते हैं।" (यशायाह 65:2)

यदि हम अच्छा करें (परमेश्वर के मार्ग पर चलें), तो हमें निश्चित रूप से स्वीकार किया जाएगा, और नयी पृथ्वी से दूर श्रापित नहीं किया जाएगा (जैसे कैन श्रापित हुआ)।

"इसलिये अब भूमि जिसने तेरे भाई का लहू तेरे हाथ से पीने के लिये अपना मुँह खोला है, उसकी ओर से तू शापित है।" (उत्पत्ति 4:11)

"“तब वह बाईं ओर वालों से कहेगा, ‘हे शापित लोगो, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है।'" (मत्ती 25:41)

"धर्मी सदा अटल रहेगा, परन्तु दुष्ट पृथ्वी पर बसने न पाएँगे।" (नीतिवचन 10:30)

15. कोढ़ की बीमारी से सीखना

परमेश्वर ने बाइबल में अक्सर ऐसी स्थितियाँ शामिल कीं जो उनके शाब्दिक अर्थ के साथ-साथ प्रतीकात्मक अर्थ भी रखती थीं।

"मैं ने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कीं, और बार बार दर्शन देता रहा; और भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा दृष्टान्त कहता आया हूँ।" (होशे 12:10)

"परन्तु जो दासी से हुआ, वह शारीरिक रीति से जन्मा; और जो स्वतंत्र स्त्री से हुआ, वह प्रतिज्ञा के अनुसार जन्मा। इन बातों में दृष्टान्त है : ये स्त्रियाँ मानो दो वाचाएँ हैं, एक तो सीनै पहाड़ की जिससे दास ही उत्पन्न होते हैं; और वह हाजिरा है।" (गलातियों 4:23–24)

निम्नलिखित पद कोढ़ के बारे में, चाहे वह व्यक्ति, वस्त्र, या घर में हो, हमारी पापमयता की बीमारी के बारे में सिखाते हैं।

"तो याजक उसको देखे, और यदि उस दाग में के रोएँ उजले हो गए हों और वह चर्म से गहरा दिखाई पड़े, तो वह कोढ़ है; जो उस जलने के दाग में से फूट निकला है; याजक उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए; क्योंकि उसमें कोढ़ की व्याधि है।.... जितने दिन तक वह व्याधि उसमें रहे उतने दिन

तक वह अशुद्ध रहेगा; और वह अशुद्ध ठहरा रहे; इसलिये वह अकेला रहा करे, उसका निवास स्थान छावनी के बाहर हो।" (लैव्यव्यवस्था 13:25,46)
"फिर जिस वस्त्र में कोढ़ की व्याधि हो, चाहे वह वस्त्र ऊन का हो चाहे सनी का,.... यदि वह व्याधि किसी वस्त्र के चाहे ताने में चाहे बाने में, या चमड़े में या चमड़े की किसी वस्तु में हरी हो या लाल सी हो, तो जानना कि वह कोढ़ की व्याधि है और वह याजक को दिखाई जाए। और याजक व्याधि को देखे, और व्याधिवाली वस्तु को सात दिन के लिये बन्द करे; और सातवें दिन वह उस व्याधि को देखे, और यदि वह वस्त्र के चाहे ताने में चाहे बाने में, या चमड़े में या चमड़े की बनी हुई किसी वस्तु में फैल गई हो, तो जानना कि व्याधि गलित कोढ़ है, इसलिये वह वस्तु, चाहे कैसे ही काम में क्यों न आती हो, तौभी अशुद्ध ठहरेगी। वह उस वस्त्र को जिसके ताने या बाने में वह व्याधि हो, चाहे वह ऊन का हो चाहे सनी का, या चमड़े की वस्तु हो, उसको जला दे, वह व्याधि गलित कोढ़ की है; वह वस्तु आग में जलाई जाए।" (लैव्यव्यवस्था 13:47, 49-52)
“तो याजक आकर देखे; और यदि वह व्याधि घर में फैल गई हो, तो वह जान ले कि घर में गलित कोढ़ है; वह अशुद्ध है। और वह सब गारे समेत पत्थर, लकड़ी और घर को खुदवाकर गिरा दे; और उन सब वस्तुओं को उठवाकर नगर से बाहर किसी अशुद्ध स्थान पर फिंकवा दे।” (लैव्यव्यवस्था 14:44-45)

इन सभी पदों में कोढ़ की बीमारी के बारे में, जाँच करने वाला याजक प्रतीकात्मक रूप से परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह का प्रतिनिधित्व करता है।
"इसलिये जब हमारा ऐसा बड़ा महायाजक है, जो स्वर्गों से होकर गया है, अर्थात् परमेश्वर का पुत्र यीशु, तो आओ, हम अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें।" (इब्रानियों 4:14)
"परमेश्वर और मसीह यीशु को गवाह करके, जो जीवतों और मरे हुओं का न्याय करेगा, और उसके प्रगट होने और राज्य की सुधि दिलाकर मैं तुझे आदेश देता हूँ।" (2 तीमुथियुस 4:1)

"पर जैसा परमेश्वर ने हमें योग्य ठहराकर सुसमाचार सौंपा, हम वैसा ही वर्णन करते हैं, और इस में मनुष्यों को नहीं, परन्तु परमेश्वर को, जो हमारे मनों को जाँचता है, प्रसन्न करते हैं।" (1 थिस्सलुनीकियों 2:4)

"क्या यह भला होगा कि वह तुम को जाँचे? क्या जैसा कोई मनुष्य को धोखा दे, वैसा ही तुम क्या उसको भी धोखा दे सकते हो?.... क्या तुम उसके माहात्म्य से भय न खाओगे? क्या उसका डर तुम्हारे मन में न समाएगा।" (अय्यूब 13:9,11)

"फिर हाग्गै ने पूछा, "यदि कोई जन मनुष्य के शव के कारण अशुद्ध होकर ऐसी किसी वस्तु को छुए, तो क्या वह अशुद्ध ठहरेगी?" याजकों ने उत्तर दिया, "हाँ, अशुद्ध ठहरेगी।" फिर हाग्गै ने कहा, "यहोवा की यही वाणी है, कि मेरी दृष्टि में यह प्रजा और यह जाति वैसी ही है, और इनके सब काम भी वैसे हैं; और जो कुछ वे वहाँ चढ़ाते हैं, वह भी अशुद्ध है।'" (हाग्गै 2:13–14)

परमेश्वर की प्रेमपूर्ण चेतावनी

1: कोढ़ी को अशुद्ध घोषित किया गया और उसे अकेले और बाहर रहने के लिए भेजा गया।

"दुष्ट मनुष्य बुराई करता हुआ नष्ट हो जाता है, परन्तु धर्मी को मृत्यु के समय भी शरण मिलती है।" (नीतिवचन 14:32)

"क्योंकि तुम यह जानते हो कि किसी व्यभिचारी, या अशुद्ध जन, या लोभी मनुष्य की, जो मूर्तिपूजक के बराबर है, मसीह और परमेश्वर के राज्य में मीरास नहीं। कोई तुम्हें व्यर्थ बातों से धोखा न दे, क्योंकि इन ही कामों के कारण परमेश्वर का क्रोध आज्ञा न माननेवालों पर भड़कता है।" (इफिसियों 5:5–6)

"परन्तु उसमें कोई अपवित्र वस्तु, या घृणित काम करनेवाला, या झूठ का गढ़नेवाला किसी रीति से प्रवेश न करेगा, पर केवल वे लोग जिनके नाम मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं।" (प्रकाशितवाक्य 21:27)

परमेश्वर की प्रेमपूर्ण चेतावनी

2: कोढ़ी के वस्त्र को अशुद्ध घोषित किया गया और आग में जला दिया गया।

"सिय्योन के पापी थरथरा गए हैं : भक्तिहीनों को कँपकँपी लगी है : हम में से कौन प्रचण्ड आग में रह सकता? हम में से कौन उस आग में बना रह सकता है जो कभी न बुझेगी?'" (यशायाह 33:14)

परमेश्वर की प्रेमपूर्ण चेतावनी

3: कोढ़ी घर को अशुद्ध घोषित किया गया और नष्ट कर दिया गया।

"उन पर हाय, क्योंकि वे मेरे पास से भटक गए! उनका सत्यानाश हो, क्योंकि उन्होंने मुझ से बलवा किया है! मैं तो उन्हें छुड़ाता रहा, परन्तु वे मुझ से झूठ बोलते आए हैं। वे मन से मेरी दोहाई नहीं देते, परन्तु अपने बिछौने पर पड़े हुए हाय, हाय, करते हैं; वे अन्न और नये दाखमधु पाने के लिये भीड़ लगाते, और मुझ से बलवा करते हैं।" (होशे 7:13–14)

"निश्चय ईश्वर तुझे सदा के लिये नष्ट कर देगा; वह तुझे पकड़कर तेरे डेरे से निकाल देगा; और जीवतों के लोक से तुझे उखाड़ डालेगा।" (भजन संहिता 52:5)

यह नया नियम यह दिखाता है कि आग, विनाश, और परमेश्वर की उपस्थिति से अलग होने के परिणाम क्या हैं।

"और तुम्हें, जो क्लेश पाते हो, हमारे साथ चैन दे; उस समय जब कि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा, और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा। वे प्रभु के सामने से और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएँगे। यह उस दिन होगा, जब वह अपने पवित्र लोगों में महिमा पाने और सब विश्वास करनेवालों में आश्चर्य का कारण होने को आएगा; क्योंकि तुम ने हमारी गवाही पर विश्वास किया।" (2 थिस्सलुनीकियों 1:7–10)

परमेश्वर ही सभी अच्छाई का स्रोत हैं, और उनकी उपस्थिति से अलग होने का अर्थ है शांति से अलग होना।

"दुष्टों के लिये कुछ शान्ति नहीं," यहोवा का यही वचन है। (यशायाह 48:22)

"वे बुराई करने को दौड़ते हैं, और निर्दोष की हत्या करने को तत्पर रहते हैं; उनकी युक्तियाँ व्यर्थ हैं, उजाड़ और विनाश ही उनके मार्गों में हैं। शान्ति का मार्ग वे जानते ही नहीं; और न उनके व्यवहार में न्याय है; उनके पथ टेढ़े हैं, जो कोई उन पर चले वह शान्ति न पाएगा।" (यशायाह 59:7–8)

हमारे पास अपने आप को शुद्ध करने की कोई आशा नहीं है, लेकिन प्रभु यीशु मसीह हमें हमारे पापों की कोढ़ जैसी बीमारी से चंगा कर सकता है और हमें शुद्ध बना सकता है।

"कौन कह सकता है कि मैंने अपने हृदय को पवित्र किया; अथवा मैं पाप से शुद्ध हुआ हूँ?" (नीतिवचन 20:9)

"अशुद्ध वस्तु से शुद्ध वस्तु को कौन निकाल सकता है? कोई नहीं।" (अय्यूब 14:4)

"एक कोढ़ी उसके पास आया, उससे विनती की, और उसके सामने घुटने टेककर उससे कहा, "यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।" उसने उस पर तरस खाकर हाथ बढ़ाया, और उसे छूकर कहा, "मैं चाहता हूँ तू शुद्ध हो जा।" और तुरन्त उसका कोढ़ जाता रहा, और वह शुद्ध हो गया।" (मरकुस 1:40–42)

"पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं, और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।" (1 यूहन्ना 1:7)

हमारे पास अपने आप को सीधा करने की कोई आशा नहीं है, लेकिन प्रभु यीशु मसीह हमें हमारे पापों के टेढ़ेपन से चंगा कर सकता है और हमें सीधा कर सकता है।

"मैंने उन सब कामों को देखा जो सूर्य के नीचे किए जाते हैं; देखो, वे सब व्यर्थ और मानो वायु को पकड़ना है। जो टेढ़ा है वह सीधा नहीं हो सकता, और जो है ही नहीं, वह गिना नहीं जा सकता।" (सभोपदेशक 1:14–15)

"वहाँ एक स्त्री थी जिसे अठारह वर्ष से एक दुर्बल करनेवाली दुष्टात्मा लगी थी, और वह कुबड़ी हो गई थी और किसी रीति से सीधी नहीं हो सकती थी। यीशु ने उसे देखकर बुलाया और कहा, “हे नारी, तू अपनी दुर्बलता से छूट गई।” तब उसने उस पर हाथ रखे, और वह तुरन्त सीधी हो गई और परमेश्वर की बड़ाई करने लगी।" (लूका 13:11–13)
"हे यहोवा मुझे चंगा कर, तब मैं चंगा हो जाऊँगा; मुझे बचा, तब मैं बच जाऊँगा; क्योंकि मैं तेरी ही स्तुति करता हूँ।" (यिर्मयाह 17:14)

हमारे पास पाप की दासता और बंधन से अपने आप को स्वतंत्र करने की कोई आशा नहीं है, लेकिन प्रभु यीशु मसीह हमें स्वतंत्र कर सकते हैं।
"हम दास तो हैं ही, परन्तु हमारे दासत्व में हमारे परमेश्वर ने हम को नहीं छोड़ दिया, वरन् फारस के राजाओं को हम पर ऐसे कृपालु किया कि हम नया जीवन पाकर अपने परमेश्वर के भवन को उठाने, और इसके खण्डहरों को सुधारने पाए, और हमें यहूदा और यरूशलेम में आड़ मिली।" (एज्रा 9:9)
"इस कारण तू इस्राएलियों से कह, ‘मैं यहोवा हूँ, और तुम को मिस्रियों के बोझों के नीचे से निकालूँगा, और उनके दासत्व से तुम को छुड़ाऊँगा, और अपनी भुजा बढ़ाकर और भारी दण्ड देकर तुम्हें छुड़ा लूँगा।" (निर्गमन 6:6)
"इसलिये यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे। " (यूहन्ना 8:36)
"क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।" (रोमियों 8:2)

स्वाभाविक रूप से, हमारे पास एक धोखेबाज और कठोर हृदय है, लेकिन प्रभु यीशु मसीह हमें एक नया हृदय दे सकते हैं।
"ऐसे लोग हैं जो अपनी दृष्टि में शुद्ध हैं, तौभी उनका मैल धोया नहीं गया।" (नीतिवचन 30:12)
"दुष्ट जन का अपराध मेरे हृदय के भीतर यह कहता है कि परमेश्वर का भय उसकी दृष्टि में नहीं है। वह अपने अधर्म के प्रगट होने और घृणित ठहरने के विषय अपने मन में चिकनी चुपड़ी बातें विचारता है।" (भजन संहिता 36:1–2)

"उसने उनसे कहा, "तुम तो मनुष्यों के सामने अपने आप को धर्मी ठहराते हो, परन्तु परमेश्वर तुम्हारे मन को जानता है, क्योंकि जो वस्तु मनुष्यों की दृष्टि में महान् है, वह परमेश्वर के निकट घृणित है।'" (लूका 16:15)

"मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देनेवाला होता है, उस में असाध्य रोग लगा है; उसका भेद कौन समझ सकता है? "मैं यहोवा मन की खोजता और हृदय को जाँचता हूँ ताकि प्रत्येक जन को उसकी चाल-चलन के अनुसार अर्थात् उसके कामों का फल दूँ।" (यिर्मयाह 17:9–10)

"क्या ही धन्य है वह जिसका अपराध क्षमा किया गया, और जिसका पाप ढाँपा गया हो। क्या ही धन्य है वह मनुष्य जिसके अधर्म का यहोवा लेखा न ले, और जिसकी आत्मा में कपट न हो।" (भजन संहिता 32:1–2)

"तो तू अपने स्वर्गीय निवासस्थान से सुनकर क्षमा करना, और एक एक के मन की जानकर उसकी चाल के अनुसार उसे फल देना; (तू ही तो आदमियों के मन का जाननेवाला है)।" (2 इतिहास 6:30)

"हे परमेश्वर, मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर, और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नये सिरे से उत्पन्न कर।" (भजन संहिता 51:10)

"मैं तुम पर शुद्ध जल छिड़कूँगा, और तुम शुद्ध हो जाओगे; और मैं तुम को तुम्हारी सारी अशुद्धता और मूरतों से शुद्ध करूँगा। मैं तुम को नया मन दूँगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूँगा, और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकालकर तुम को मांस का हृदय दूँगा।" (यहेजकेल 36:25–26)

16. <u>परमेश्वर की दृष्टि में दो प्रकार के लोग -</u>

परमेश्वर की दृष्टि में, हम या तो दुष्ट (अपने बल पर भरोसा करने वाले) होते हैं, या धर्मी संत (परमेश्वर पर भरोसा करने वाले) होते हैं।

""वह अपने भक्तों के पाँवों को सम्भाले रहेगा, परन्तु दुष्ट अन्धियारे में चुपचाप पड़े रहेंगे; क्योंकि कोई मनुष्य अपने बल के कारण प्रबल न होगा।" (1 शमूएल 2:9)

"क्योंकि दुष्टों की भुजाएँ तो तोड़ी जाएँगी; परन्तु यहोवा धर्मियों को सम्भालता है।" (भजन संहिता 37:17)

"यहोवा ने सारी जातियों के सामने अपनी पवित्र भुजा प्रगट की है; और पृथ्वी के दूर दूर देशों के सब लोग हमारे परमेश्वर का किया हुआ उद्धार निश्चय देख लेंगे।" (यशायाह 52:10)

"उसने देखा कि कोई भी पुरुष नहीं, और इस से अचम्भा किया कि कोई विनती करने वाला नहीं; तब उसने अपने ही भुजबल से उद्धार किया, और अपने धर्मी होने के कारण वह सम्भल गया।" (यशायाह 59:16)

"तू ने अपने भुजबल से अपनी प्रजा, याकूब और यूसुफ के वंश को छुड़ा लिया है।" (भजन संहिता 77:15)

"मेरा छुटकारा निकट है; मेरा उद्धार प्रगट हुआ है; मैं अपने भुजबल से देश देश के लोगों का न्याय करूँगा। द्वीप मेरी बाट जोहेंगे और मेरे भुजबल पर आशा रखेंगे।" (यशायाह 51:5)

जैसे परमेश्वर की दृष्टि में दो प्रकार के लोग हैं, वैसे ही उनके लिए दो परिणाम भी हैं।

"और ये अनन्त दण्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।" (मत्ती 25:46)

"धर्मियों को आशा रखने में आनन्द मिलता है, परन्तु दुष्टों की आशा टूट जाती है। यहोवा खरे मनुष्य का गढ़ ठहरता है, परन्तु अनर्थकारियों का विनाश होता है।" (नीतिवचन 10:28–29)

"खरे मनुष्य पर दृष्टि कर और धर्मी को देख, क्योंकि मेल से रहनेवाले पुरुष का अन्तफल अच्छा है। परन्तु अपराधी एक साथ नष्ट किए जाएँगे; दुष्टों का अन्तफल सर्वनाश है। धर्मियों की मुक्ति यहोवा की ओर से होती है; संकट के समय वह उनका दृढ़ गढ़ है। यहोवा उनकी सहायता करके उनको बचाता है; वह उनको दुष्टों से छुड़ाकर उनका उद्धार करता है, इसलिये कि उन्होंने उसमें शरण ली है।" (भजन संहिता 37:37–40)

"धर्मी विपत्ति से छूट जाता है, परन्तु दुष्ट उसी विपत्ति में पड़ जाता है।" (नीतिवचन 11:8)

"मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा, और वे उसके राज्य में से सब ठोकर के कारणों को और कुकर्म करनेवालों को इकट्ठा करेंगे, और उन्हें

आग के कुण्ड में डालेंगे, जहाँ रोना और दाँत पीसना होगा। उस समय धर्मी अपने पिता के राज्य में सूर्य के समान चमकेंगे। जिसके कान हों वह सुन ले।" (मत्ती 13:41–43)

परमेश्वर लोगों से प्रेम करते हैं और चाहते हैं कि वे उद्धार का उपहार पाकर बच जाएं।

"इस पर यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुम से सच सच कहता हूँ, पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है; क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है।.... फिर भी तुम जीवन पाने के लिये मेरे पास आना नहीं चाहते।'" (यूहन्ना 5:19,40)

"इसलिये तू उनसे यह कह, परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है : मेरे जीवन की सौगन्ध, मैं दुष्ट के मरने से कुछ भी प्रसन्न नहीं होता, परन्तु इससे कि दुष्ट अपने मार्ग से फिरकर जीवित रहे; हे इस्राएल के घराने, तुम अपने अपने बुरे मार्ग से फिर जाओ; तुम क्यों मरो? '" (यहेजकेल 33:11)

"यह देखकर उसके चेले याकूब और यूहन्ना ने कहा, "हे प्रभु, क्या तू चाहता है कि हम आज्ञा दें, कि आकाश से आग गिरकर उन्हें भस्म कर दे?" परन्तु उसने फिरकर उन्हें डाँटा [और कहा, "तुम नहीं जानते कि तुम कैसी आत्मा के हो। क्योंकि मनुष्य का पुत्र लोगों के प्राणों का नाश करने नहीं वरन् बचाने के लिए आया है।"] और वे किसी दूसरे गाँव में चले गए।'" (लूका 9:54–56)

हम सभी स्वाभाविक रूप से एक पापी स्वभाव के साथ जन्म लेते हैं, लेकिन हम प्रभु यीशु मसीह के धार्मिकता पर भरोसा करके धर्मी बन सकते हैं।

"दुष्ट लोग जन्मते ही पराए हो जाते हैं, वे पेट से निकलते ही झूठ बोलते हुए भटक जाते हैं।" (भजन संहिता 58:3)

"देख, मैं अधर्म के साथ उत्पन्न हुआ, और पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पड़ा।" (भजन संहिता 51:5)

"यीशु ने उसको उत्तर दिया, "मैं तुझ से सच सच कहता हूँ, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।'" (यूहन्ना 3:3)

"जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।" (2 कुरिन्थियों 5:21)
"परन्तु अब व्यवस्था से अलग परमेश्वर की वह धार्मिकता प्रगट हुई है, जिसकी गवाही व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता देते हैं, अर्थात् परमेश्वर की वह धार्मिकता जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करनेवालों के लिये है।" (रोमियों 3:21–22)

हमारे केवल दो ही पिता हो सकते है और यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम एक के पीछे चलते है या दूसरे के । यदि हम नया जन्म लेते है तो ईश्वर हमारा पिता है ।

"यीशु ने उनसे कहा, "यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता, तो तुम मुझ से प्रेम रखते; क्योंकि मैं परमेश्वर की ओर से आया हूँ। मैं आप से नहीं आया, परन्तु उसी ने मुझे भेजा।... तुम अपने पिता शैतान से हो और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से हत्यारा है और सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उसमें है ही नहीं। जब वह झूठ बोलता, तो अपने स्वभाव ही से बोलता है; क्योंकि वह झूठा है वरन् झूठ का पिता है।'" (यूहन्ना 8:42,44)
"परन्तु इसी जाति के लोग टेढ़े और तिर्छे हैं; ये बिगड़ गए, ये उसके पुत्र नहीं; यह उनका कलंक है।" (व्यवस्थाविवरण 32:5)

केवल दो प्रकार के विश्वास हैं - हमारा स्वयं के कार्यों पर भरोसा करना या परमेश्वर के कार्य पर भरोसा करना।

"यहोवा यों कहता है : "स्रापित है वह पुरुष जो मनुष्य पर भरोसा रखता है, और उसका सहारा लेता है, जिसका मन यहोवा से भटक जाता है। वह निर्जल देश के अधमरे पेड़ के समान होगा और कभी भलाई न देखेगा। वह निर्जल और निर्जन तथा लोनछाई भूमि पर बसेगा।'" (यिर्मयाह 17:5–6)
"धन्य है वह पुरुष जो यहोवा पर भरोसा रखता है, जिसने परमेश्वर को अपना आधार माना हो। वह उस वृक्ष के समान होगा जो नदी के किनारे लगा हो और उसकी जड़ जल के पास फैली हो; जब धूप होगी तब उसको

न लगेगी, उसके पत्ते हरे रहेंगे, और सूखे वर्ष में भी उनके विषय में कुछ चिन्ता न होगी, क्योंकि वह तब भी फलता रहेगा।'" (यिर्मयाह 17:7–8)
"मैं उसके बच्चों को मार डालूँगा; तब सब कलीसियाएँ जान लेंगी कि हृदय और मन का परखनेवाला मैं ही हूँ, और मैं तुम में से हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला दूँगा।'" (प्रकाशितवाक्य 2:23)
"जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है; और जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं, उसके पास जीवन भी नहीं है।'" (1 यूहन्ना 5:12)

17. अपनी आवश्यकता को समझना

हमें सब कुछ "बेचना/त्यागना" चाहिए, यह समझते हुए कि यह हमारे कार्यों पर निर्भर नहीं करता। हमारे पास कोई भलाई नहीं है, और केवल प्रभु यीशु मसीह ही अच्छा है।

"अत: यह न तो चाहनेवाले की, न दौड़नेवाले की परन्तु दया करनेवाले परमेश्वर की बात है।" (रोमियों 9:16)
"जब वह वहाँ से निकलकर मार्ग में जा रहा था, तो एक मनुष्य उसके पास दौड़ता हुआ आया, और उसके आगे घुटने टेककर उससे पूछा, "हे उत्तम गुरु, अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिये मैं क्या करूँ?" यीशु ने उससे कहा, "तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? कोई उत्तम नहीं, केवल एक अर्थात् परमेश्वर। तू आज्ञाओं को तो जानता है : 'हत्या न करना, व्यभिचार न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, छल न करना, अपने पिता और अपनी माता का आदर करना'।" उसने उससे कहा, "हे गुरु, इन सब को मैं लड़कपन से मानता आया हूँ।" यीशु ने उस पर दृष्टि करके उससे प्रेम किया, और उससे कहा, "तुझ में एक बात की घटी है। जा, जो कुछ तेरा है उसे बेच कर कंगालों को दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले।" इस बात से उसके चेहरे पर उदासी छा गई, और वह शोक करता हुआ चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था।" (मरकुस 10:17–22)
"इसी रीति से तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, वह मेरा चेला नहीं हो सकता।" (लूका 14:33)

यीशु ने कहा "तुझमें एक बात की कमी है।" सबसे महत्वपूर्ण यह है कि क्या हमारा नाम जीवन की पुस्तक में है, जो प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने से लिखा जाता है।

"फिर मैं ने एक बड़ा श्वेत सिंहासन और उसको, जो उस पर बैठा हुआ है, देखा; उसके सामने से पृथ्वी और आकाश भाग गए, और उनके लिये जगह न मिली। फिर मैं ने छोटे बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा, और पुस्तकें खोली गईं; और फिर एक और पुस्तक खोली गई, अर्थात् जीवन की पुस्तक; और जैसा उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, वैसे ही उनके कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया।...और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया।" (प्रकाशितवाक्य 20:11–12,15)

क्रूस को उठाना हमारे घमण्ड की मृत्यु है, यह नकारना कि हमारे पास कुछ भी अच्छा है, और इस सच्चाई से अपमानित न होना है।

"उसने भीड़ को अपने चेलों समेत पास बुलाकर उनसे कहा, “जो कोई मेरे पीछे आना चाहे, वह अपने आपे से इन्कार करे और अपना क्रूस उठाकर, मेरे पीछे हो ले।'" (मरकुस 8:34)

"परन्तु हे भाइयो, यदि मैं अब तक खतना का प्रचार करता हूँ, तो क्यों अब तक सताया जाता हूँ? फिर तो क्रूस की ठोकर जाती रही।" (गलातियों 5:11)

"सेनाओं के यहोवा ही को पवित्र जानना; उसी का डर मानना, और उसी का भय रखना। और वह शरणस्थान होगा, परन्तु इस्राएल के दोनों घरानों के लिये ठोकर का पत्थर और ठेस की चट्टान, और यरूशलेम के निवासियों के लिये फन्दा और जाल होगा।" (यशायाह 8:13–14)

"और धन्य है वह, जो मेरे कारण ठोकर न खाए।" (मत्ती 11:6)

परमेश्वर का उद्धार सभी के लिए उपलब्ध है, लेकिन इसे वही प्राप्त कर सकते हैं जो अपनी आवश्यकता को समझते हैं और विश्वास के साथ उसके पास आते हैं।

"और वही हमारे पापों का प्रायश्चित है, और केवल हमारे ही नहीं वरन् सारे जगत के पापों का भी" (1 यूहन्ना 2:2)

"क्योंकि परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है।" (तीतुस 2:11)
"क्योंकि हम परिश्रम और यत्न इसी लिये करते हैं कि हमारी आशा उस जीवते परमेश्वर पर है, जो सब मनुष्यों का और निज करके विश्वासियों का उद्धारकर्ता है।" (1 तीमुथियुस 4:10)

यदि हम अपनी पापी स्थिति की गहन आवश्यकता को समझें और प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करें, तो हम उसके उद्धार के लिए उसे पुकारेंगे।
"क्योंकि वह दोहाई देनेवाले दरिद्र का, और दुःखी और असहाय मनुष्य का उद्धार करेगा। वह कंगाल और दरिद्र पर तरस खाएगा, और दरिद्रों के प्राणों को बचाएगा।" (भजन संहिता 72:12–13)
"यह बात सच और हर प्रकार से मानने के योग्य है कि मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिये जगत में आया, जिनमें सबसे बड़ा मैं हूँ। पर मुझ पर इसलिये दया हुई कि मुझ सबसे बड़े पापी में यीशु मसीह अपनी पूरी सहनशीलता दिखाए, कि जो लोग उस पर अनन्त जीवन के लिये विश्वास करेंगे उनके लिये मैं एक आदर्श बनूँ।" (1 तीमुथियुस 1:15–16)
"और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है; क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए कि वह है, और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।" (इब्रानियों 11:6)
"यहूदियों और यूनानियों में कुछ भेद नहीं, इसलिये कि वह सब का प्रभु है और अपने सब नाम लेनेवालों के लिये उदार है। क्योंकि, “जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।'" (रोमियों 10:12–13)

यदि हम महसूस करें कि हम पाप के रोग से ग्रसित हैं और यीशु पर विश्वास करें, तो हम उसके पास जाएंगे, ताकि वह हमें चंगा करे और हम मृत्यु से बच जाएं।
"यह सुनकर यीशु ने उनसे कहा, “वैद्य भले चंगों के लिए नहीं परन्तु बीमारों के लिए आवश्यक है। इसलिये तुम जाकर इसका अर्थ सीख लो : ‘मैं बलिदान नहीं परन्तु दया चाहता हूँ।’ क्योंकि मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को बुलाने आया हूँ।”'" (मत्ती 9:12–13)

"मैं ने कहा, “हे यहोवा, मुझ पर अनुग्रह कर; मुझ को चंगा कर, क्योंकि मैं ने तेरे विरुद्ध पाप किया है!'" (भजन संहिता 41:4)

यदि हम अपनी धार्मिकता की दरिद्रता को महसूस करें और परमेश्वर की धार्मिकता के लिए भूखे-प्यासे हों, तो हम स्वर्ग में आनंदित और हर्षित होंगे।

"धन्य हैं वे, जो धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएँगे।" (मत्ती 5:6)

"तब उसने अपने चेलों की ओर देखकर कहा, “धन्य हो तुम जो दीन हो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य तुम्हारा है। “धन्य हो तुम जो अब भूखे हो, क्योंकि तृप्त किए जाओगे। “धन्य हो तुम जो अब रोते हो, क्योंकि हँसोगे।'" (लूका 6:20–21)

"हे मेरे प्रिय भाइयो, सुनो। क्या परमेश्वर ने इस जगत के कंगालों को नहीं चुना कि विश्वास में धनी और उस राज्य के अधिकारी हों, जिसकी प्रतिज्ञा उस ने उनसे की है जो उससे प्रेम रखते हैं?" (याकूब 2:5)

"तब मरियम ने कहा, “मेरा प्राण प्रभु की बड़ाई करता है और मेरी आत्मा मेरे उद्धार करनेवाले परमेश्वर से आनन्दित हुई,....क्योंकि उस शक्तिमान ने मेरे लिये बड़े-बड़े काम किए हैं। उसका नाम पवित्र है,....उसने भूखों को अच्छी वस्तुओं से तृप्त किया, और धनवानों को छूछे हाथ निकाल दिया।'" (लूका 1:46–47,49,53)

"इस दीन जन ने पुकारा तब यहोवा ने सुन लिया, और उसको उसके सब कष्टों से छुड़ा लिया।" (भजन संहिता 34:6)

"भूख और प्यास के मारे, वे विकल हो गए। तब उन्होंने संकट में यहोवा की दोहाई दी, और उसने उनको सकेती से छुड़ाया; और उनको ठीक मार्ग पर चलाया, ताकि वे बसने के लिये किसी नगर को जा पहुँचे। लोग यहोवा की करुणा के कारण, और उन आश्चर्यकर्मों के कारण, जो वह मनुष्यों के लिये करता है, उसका धन्यवाद करें! क्योंकि वह अभिलाषी जीव को सन्तुष्ट करता है, और भूखे को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है।" (भजन संहिता 107:5–9)

"तेरा झुण्ड उस में बसने लगा; हे परमेश्वर, तू ने अपनी भलाई से दीन जन के लिये तैयारी की है।" (भजन संहिता 68:10)

लेकिन, यदि हम अपनी "सम्पत्ति" पर भरोसा करते हैं (सोचते हैं कि हम भलाई में धनी हैं), तो अंत में हमें एहसास होगा कि हमारी "सम्पत्ति" वास्तव में बेकार थी।

"परन्तु हाय तुम पर जो धनवान हो, क्योंकि तुम अपनी शान्ति पा चुके। “हाय तुम पर जो अब तृप्त हो, क्योंकि भूखे होगे। “हाय तुम पर जो अब हँसते हो, क्योंकि शोक करोगे और रोओगे।" (लूका 6:24–25)

"जो अपने धन पर भरोसा रखता है वह गिर जाता है, परन्तु धर्मी लोग नये पत्ते के समान लहलहाते हैं।" (नीतिवचन 11:28)

"देखो, यह वही पुरुष है जिसने परमेश्वर को अपनी शरण नहीं माना, परन्तु अपने धन की बहुतायत पर भरोसा रखता था, और अपने को दुष्टता में दृढ़ करता रहा!" (भजन संहिता 52:7)

"क्योंकि तू जो अपने कामों और सम्पत्ति पर भरोसा रखता है, इस कारण तू भी पकड़ा जाएगा; और कमोश देवता भी अपने याजकों और हाकिमों समेत बँधुआई में जाएगा।" (यिर्मयाह 48:7)

"हे धनवानो, सुन तो लो, तुम अपने आनेवाले क्लेशों पर चिल्ला-चिल्लाकर रोओ। तुम्हारा धन बिगड़ गया है और तुम्हारे वस्त्रों को कीड़े खा गए हैं।" (याकूब 5:1–2)

"कोई तो धन बटोरता, परन्तु उसके पास कुछ नहीं रहता, और कोई धन उड़ा देता, तौभी उसके पास बहुत रहता है।" (नीतिवचन 13:7)

18. परमेश्वर का उद्धार सभी के लिए उपलब्ध है

परमेश्वर का उद्धार हमें उन सभी दुष्टता के कामों के बावजूद भी उपलब्ध है जो हमने किए हैं। यह परमेश्वर की इच्छा है कि हम उद्धार प्राप्त करें।

"क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करनेवाले के लिये, पहले तो यहूदी फिर यूनानी के लिये, उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य है। क्योंकि उसमें परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से

और विश्वास के लिये प्रगट होती है; जैसा लिखा है, "विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा।" (रोमियों 1:16–17)

"उस समय जो कोई यहोवा से प्रार्थना करेगा, वह छुटकारा पाएगा; और यहोवा के वचन के अनुसार सिय्योन पर्वत पर, और यरूशलेम में जिन बचे हुओं को यहोवा बुलाएगा, वे उद्धार पाएँगे।" (योएल 2:32)

"यहोवा अपने दासों का प्राण मोल लेकर बचा लेता है; और जितने उसके शरणागत हैं उन में से कोई भी दोषी न ठहरेगा।" (भजन संहिता 34:22)

"क्योंकि हे प्रभु, तू भला और क्षमा करनेवाला है, और जितने तुझे पुकारते हैं उन सभों के लिये तू अति करुणामय है।" (भजन संहिता 86:5)

"परन्तु मैं तो परमेश्वर को पुकारूँगा; और यहोवा मुझे बचा लेगा।" (भजन संहिता 55:16)

"आत्मा और दुल्हिन दोनों कहती हैं, "आ!" और सुननेवाला भी कहे, "आ!" जो प्यासा हो वह आए, और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंतमेंत ले।" (प्रकाशित वाक्य 22:17)

"प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कुछ लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता कि कोई नष्ट हो, वरन् यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले।" (2 पतरस 3:9)

"यह हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर को अच्छा लगता और भाता भी है, जो यह चाहता है कि सब मनुष्यों का उद्धार हो, और वे सत्य को भली भाँति पहचान लें।" (1 तीमुथियुस 2:3–4)

सच तो यह है कि परमेश्वर की दृष्टि में हर एक पाप भयानक है, लेकिन यदि हम उसकी ओर फिरें, तो वह हमें क्षमा करता है। वह केवल एक पाप को क्षमा नहीं कर सकता, और वह है पवित्र आत्मा के खिलाफ निंदा करना, जिसका अर्थ है कि अपने पूरे जीवन में यीशु में विश्वास करने की उसकी आज्ञा की अवहेलना करते हुए उसे झूठा कहना।

"मैं तुम से सच कहता हूँ कि मनुष्यों की सन्तान के सब पाप और निन्दा जो वे करते हैं, क्षमा की जाएगी, परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा के विरुद्ध

निन्दा करे, वह कभी भी क्षमा न किया जाएगा : वरन् वह अनन्त पाप का अपराधी ठहरता है।" (मरकुस 3:28–29)

"इतने पर भी वे और अधिक पाप करते गए; और परमेश्वर के आश्चर्यकर्मों की प्रतीति न की।" (भजन संहिता 78:32)

"परन्तु अब प्रगट होकर सनातन परमेश्वर की आज्ञा से भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों के द्वारा सब जातियों को बताया गया है कि वे विश्वास से आज्ञा माननेवाले हो जाएँ।" (रोमियों 16:26)

"उसकी आज्ञा यह है कि हम उसके पुत्र यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करें, और जैसा उस ने हमें आज्ञा दी है उसी के अनुसार आपस में प्रेम रखें।" (1 यूहन्ना 3:23)

"और कहा, “समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो।" (मरकुस 1:15)

"जो परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है वह अपने ही में गवाही रखता है। जिसने परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया उसने उसे झूठा ठहराया, क्योंकि उसने उस गवाही पर विश्वास नहीं किया जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के विषय में दी है। और वह गवाही यह है कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है, और यह जीवन उसके पुत्र में है।" (1 यूहन्ना 5:10–11)

"यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है। यदि हम कहें कि हम ने पाप नहीं किया, तो उसे झूठा ठहराते हैं, और उसका वचन हम में नहीं है।" (1 यूहन्ना 1:9–10)

"जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।" (यूहन्ना 3:36)

हमारे पापों के लिए अपराधबोध या दुःख महसूस करना, हमारे पापों को स्वीकार करना, या उनके लिए प्रायश्चित करना, हमें उद्धार नहीं दिला सकता।

"जब उसके पकड़वानेवाले यहूदा ने देखा कि वह दोषी ठहराया गया है तो वह पछताया और वे तीस चाँदी के सिक्के प्रधान याजकों और पुरनियों के पास फेर लाया और कहा, "मैं ने निर्दोष को घात के लिए पकड़वाकर पाप किया है!" उन्होंने कहा, "हमें क्या? तू ही जान।" तब वह उन सिक्कों को मन्दिर में फेंककर चला गया, और जाकर अपने आप को फाँसी दी।" (मत्ती 27:3–5)

"क्योंकि परमेश्वर-भक्ति का शोक ऐसा पश्चाताप उत्पन्न करता है जिसका परिणाम उद्धार है और फिर उससे पछताना नहीं पड़ता। परन्तु सांसारिक शोक मृत्यु उत्पन्न करता है।" (2 कुरिन्थियों 7:10)

सच्चा पश्चाताप अपने पाप को स्वीकार करना और परमेश्वर के मार्ग पर चलने के लिए लौटना है जो प्रभु यीशु पर विश्वास करने से होता है ।

"प्रभु यहोवा की यह वाणी है, क्या मैं दुष्ट के मरने से कुछ भी प्रसन्न होता हूँ? क्या मैं इससे प्रसन्न नहीं होता कि वह अपने मार्ग से फिरकर जीवित रहे?" (यहेजकेल 18:23)

""तौभी," यहोवा की यह वाणी है, "अभी भी सुनो, उपवास के साथ रोते-पीटते अपने पूरे मन से फिरकर मेरे पास आओ।" (योएल 2:12)

"अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड़; और उस पर भरोसा रख, वही पूरा करेगा।" (भजन संहिता 37:5)

"तब उस ने पवित्रशास्त्र बूझने के लिये उनकी समझ खोल दी, और उनसे कहा, "यों लिखा है कि मसीह दुःख उठाएगा, और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा, और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा।'" (लूका 24:45–47)

सुसमाचार का सरल संदेश

हमारे द्वारा किया गया कोई भी कार्य उद्धार पाने के लिए पर्याप्त नहीं है। परमेश्वर ने अपने प्रेम में, पूरी तरह से अपने भले कार्य और अपने कार्य के द्वारा हमारे लिए उद्धार प्रदान किया। उद्धार पाने के लिए हम केवल:
1. हम अपनी पापमयता को स्वीकार करें।
2. यीशु पर विश्वास करें, जो हमारे पापों के लिए मरा और फिर से जी उठा।
3. उससे प्रार्थना करें और उसकी मुफ्त उद्धार की देन को स्वीकार करें।

"हे परमेश्वर, अपनी करुणा के अनुसार मुझ पर अनुग्रह कर; अपनी बड़ी दया के अनुसार मेरे अपराधों को मिटा दे। मुझे भली भाँति धोकर मेरा अधर्म दूर कर, और मेरा पाप छुड़ाकर मुझे शुद्ध कर! मैं तो अपने अपराधों को जानता हूँ, और मेरा पाप निरन्तर मेरी दृष्टि में रहता है।" (भजन संहिता 51:1–3)
"और उन्हें बाहर लाकर कहा, “हे सज्जनो, उद्धार पाने के लिये मैं क्या करूँ?” उन्होंने कहा, “प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।'" (प्रेरितों के काम 16:30–31)
"कि यदि तू अपने मुँह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।" (रोमियों 10:9)
"अत: जब तुम बुरे होकर, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएँ देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने माँगनेवालों को अच्छी वस्तुएँ क्यों न देगा?" (मत्ती 7:11)

यदि हमने वास्तव में विश्वास किया है, तो हम सभी अपराधबोध और शर्म से मुक्त हैं। यह महान आनंद का कारण है!
"तब उन्हें फिर एक दूसरे से यह न कहना पड़ेगा कि यहोवा को जानो, क्योंकि, यहोवा की यह वाणी है, छोटे से लेकर बड़े तक, सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे; क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूँगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूँगा।" (यिर्मयाह 31:34)

"उदयाचल अस्ताचल से जितनी दूर है, उसने हमारे अपराधों को हम से उतनी ही दूर कर दिया है।" (भजन संहिता 103:12)
"क्योंकि पवित्रशास्त्र यह कहता है, “जो कोई उस पर विश्वास करेगा वह लज्जित न होगा।" (रोमियों 10:11)
"अत: अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं। [क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन् आत्मा के अनुसार चलते हैं।]" (रोमियों 8:1)
"उससे तुम बिन देखे प्रेम रखते हो, और अब तो उस पर बिन देखे भी विश्वास करके ऐसे आनन्दित और मगन होते हो जो वर्णन से बाहर और महिमा से भरा हुआ है; और अपने विश्वास का प्रतिफल अर्थात् आत्माओं का उद्धार प्राप्त करते हो।" (1 पतरस 1:8–9)

परमेश्वर का वचन जानने और उसमें समय बिताना अमूल्य है।
यह हमें परमेश्वर को बेहतर समझने, आत्मिक रूप से बढ़ने और ग़लत शिक्षाओं से बचने में मदद करता है।
"जैसे कोई बड़ी लूट पाकर हर्षित होता है, वैसे ही मैं तेरे वचन के कारण हर्षित हूँ।" (भजन संहिता 119:162)
"उसकी आज्ञा का पालन करने से मैं न हटा, और मैं ने उसके वचन अपनी इच्छा से कहीं अधिक काम के जानकर सुरक्षित रखे।" (अय्यूब 23:12)
"यीशु ने उनसे कहा, “क्या तुम इस कारण से भूल में नहीं पड़े हो कि तुम न तो पवित्रशास्त्र ही को जानते हो, और न ही परमेश्वर की सामर्थ्य को?'" (मरकुस 12:24)
"मेरे पैरों को अपने वचन के मार्ग पर स्थिर कर, और किसी अनर्थ बात को मुझ पर प्रभुता न करने दे।" (भजन संहिता 119:133)
"नये जन्मे हुए बच्चों के समान निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ।" (1 पतरस 2:2)

बाइबल को समझने का सबसे अच्छा स्रोत, स्वयं बाइबल ही है।
साथ ही, परमेश्वर पवित्र आत्मा, जो प्रत्येक सच्चे विश्वासियों में वास करता है, हमें सीधे अपने वचन का अर्थ सिखा सकता है।
"परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।" (यूहन्ना 14:26)
"परन्तु तुम्हारा वह अभिषेक जो उसकी ओर से किया गया, तुम में बना रहता है; और तुम्हें इसका प्रयोजन नहीं कि कोई तुम्हें सिखाए, वरन् जैसे वह अभिषेक जो उसकी ओर से किया गया तुम्हें सब बातें सिखाता है, और यह सच्चा है और झूठा नहीं; और जैसा उसने तुम्हें सिखाया है वैसे ही तुम उसमें बने रहते हो।" (1 यूहन्ना 2:27)
"पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो तो परमेश्वर से माँगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है, और उसको दी जाएगी।" (याकूब 1:5)
"क्योंकि उसका परमेश्वर उसको ठीक ठीक काम करना सिखलाता और बतलाता है।" (यशायाह 28:26)

इस पुस्तिका को बिना संशोधन किए और बिना किसी शुल्क के वितरित किया जा सकता है।
इसे विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक प्रारूपों में डाउनलोड किया जा सकता है या ऑनलाइन पढ़ा भी जा सकता है:
[wonderfulsalvation.com] (https://www.wonderfulsalvation.com)